मई २०१०

दादा वाणी

मूल्य रु. १०

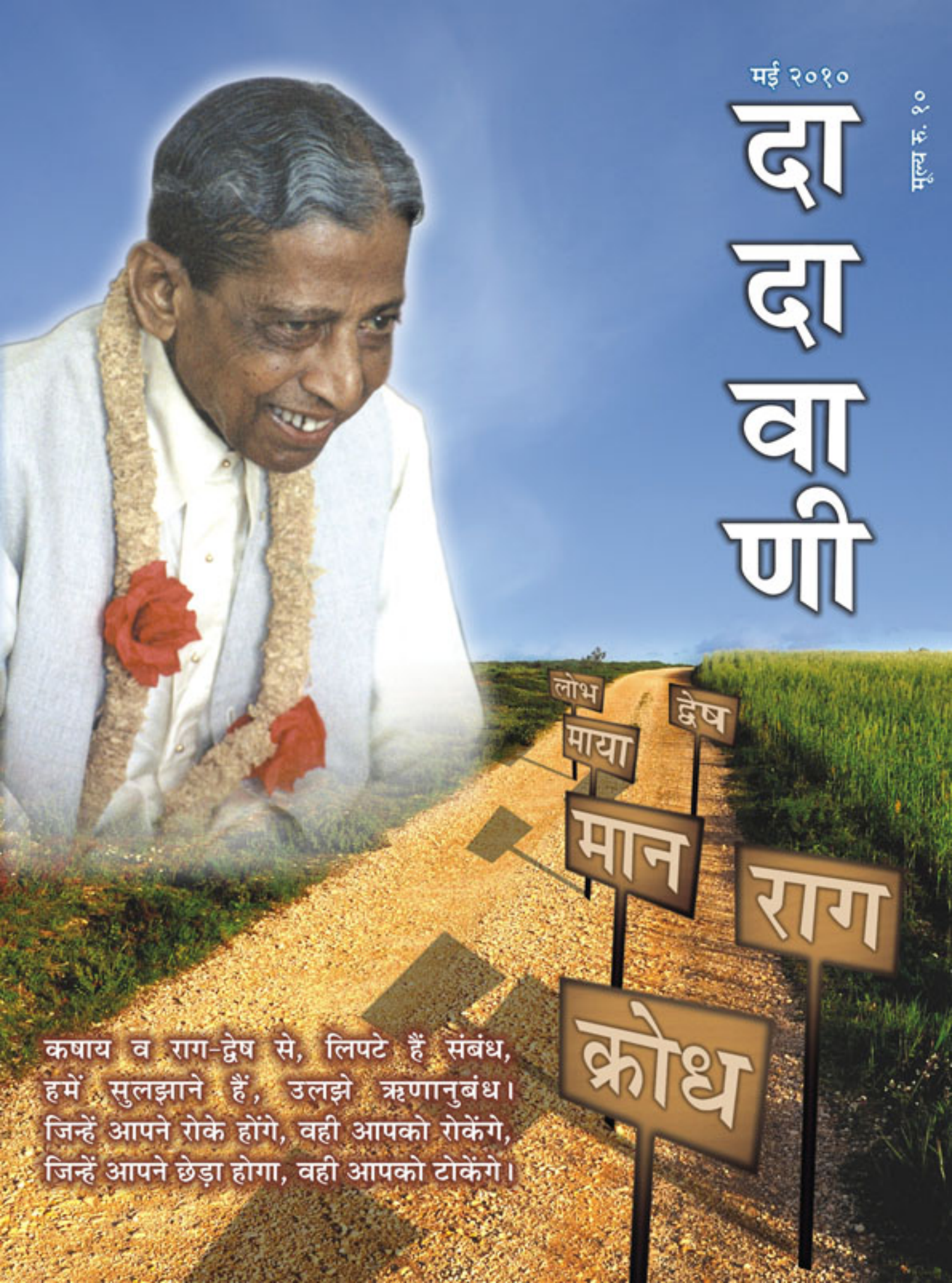

कषाय व राग-द्वेष से, लिपटे हैं संबंध,
हमें सुलझाने हैं, उलझे ऋणानुबंध।
जिन्हें आपने रोके होंगे, वही आपको रोकेंगे,
जिन्हें आपने छेड़ा होगा, वही आपको टोकेंगे।

तंत्री तथा संपादक :
दीपक देसाई
वर्ष : ५, अंक : ७
अखंड क्रमांक : ५५
मई २०१०

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-३८२४२१
फोन : (०७९) ३९८३०१००
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
अहमदाबाद : (079) 27540408
वडोदरा : (0265) 2414142
मुंबई : 9323528901
राजकोट त्रिमंदिर :
9924343478, 9274111393
U.S.A. : 785-271-0869
U.K.: 07956476253
Website : www.dadashri.org
hindi.dadabhagwan.org

Publisher, Owner & Printed by :
Deepak Desai on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printer/Press :
Mahavideh Foundation
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल का
भारत : ८०० रुपये
यु.एस.ए. : १५० डॉलर
यु.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : १५ डॉलर
यु.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के
नाम से भेजे।

दादावाणी

कषायों से अवरुद्ध मोक्षमार्ग

संपादकीय

जगत् के लोग जीवन में सुख, शांति और आनंद प्राप्त करने के लिए प्रयत्न तो करते हैं, लेकिन सच्चा सुख या आनंद क्यों प्राप्त नहीं होता? जगत् सारा कषाय में पड़ा हुआ हैं। कषाय अर्थात् क्रोध-मान-माया-लोभ, ये सारी कमज़ोरियाँ हैं। आत्मा को दुःख दे, वे सब कषाय कहलाते हैं। लोगों को कषाय पसंद नहीं है, फिर भी कषायों ने उन्हें घेर लिया है। कषाय के ताबे में ही सब आ गए हैं। फिर जीवन में सच्चा आनंद किस तरह प्राप्त हो?

कषाय की ग़ैरहाज़िरी वही आनंद, जगत् विस्मृत करवाए उसे ही आत्मा का आनंद कहते हैं। राग-द्वेष और कषाय से आत्मा पर आवरण आता है और आनंद चला जाता है। खुद के कषाय ही खुद के दुश्मन हैं। बाहर दूसरा कोई दुश्मन है ही नहीं। ये कषाय ही उसे मार रहे हैं। वास्तव में गुनहगार अपने कषाय ही हैं। मनुष्य को कषायों से ही जीवन में छटपटाहट रहती है और इसलिए ही सच्चा आनंद अनुभव में नहीं आता।

वीतरागों ने कषाय की मंदता को ही धर्म कहा हैं और संपूर्ण कषाय रहित दशा को मोक्ष कहते हैं। कषायों का कारण भ्रांति है। और स्वरूप की अज्ञानता से भ्रांति उत्पन्न हो गई है। 'मैं करता हूँ' और 'मैं जानता हूँ' इस भ्रांति से क्रोध-मान-माया-लोभ, ये सभी कमज़ोरियाँ खड़ी हो गई हैं। कषायों का आधार अहंकार है और अहंकार की वज़ह से यह जगत् खड़ा रहा है। यदि अहंकार चला जाए तो फिर आधार नहीं रहने से कषाय गिर जाते हैं।

अज्ञानता से, अहंकार से मुक्ति, उसका नाम मोक्ष। जो खुद मुक्त हुए हों, उनसे ही मुक्ति मिलती है। सर्व कषाय-विषय से मुक्त ऐसे ज्ञानी पुरुष, जगत् निष्ठा में से उठाकर स्वरूप में बिठा दें और ब्रह्मनिष्ठ बना दें, तभी कषायों से मुक्ति होती है। सच्चा ज्ञान उसे कहा जाता है कि जो कषायों को उड़ा डाले! लेकिन प्रश्न यह होता है कि इस काल में वैसा ज्ञान मिलना क्या संभव है? इस काल के आश्चर्य समान परम पूज्य दादा भगवान के ज्ञान द्वारा सिर्फ दो ही घंटे में आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है। और सच्चे आनंद और सुख की अनुभूति होती है।

स्वरूप ज्ञान की प्राप्ति के बाद चार्ज कषाय चले जाते हैं, सिर्फ डिस्चार्ज कषाय रहते हैं। उनका, आज्ञा में रहकर समभाव से निकाल करना रहता है। जैसे-जैसे मुरदा (डिस्चार्ज) अहंकार पिघलता जाता है वैसे कषाय रहितता अनुभव में आती है और सनातन सुख-आनंद प्रकट होते जाते हैं।

प्रस्तुत संकलन में परम पूज्य दादा भगवान उद्बोधित वाणी में से, कषाय किसे कहते हैं, कषाय का कारण, कषायों की खुराक, कषायों के प्रकार, कषायों से मुक्ति किस प्रकार मिलती है और कषाय के सामने जागृतिपूर्वक आज्ञा का पालन करके, सच्चे आनंद और मुक्ति का सुख किस तरह अनुभव किया जा सकता है, उसकी सच्ची समझ प्राप्त होती है। जो साधक को कषायों के असर से मुक्त होने के पुरुषार्थ में सचोट मार्गदर्शन देकर प्रगति के सोपान पर आगे बढ़ाएगी इसी अभ्यर्थना के साथ जय सच्चिदानंद।

दीपक देसाई ....

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदुभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधार कर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

कषायों से अवरुद्ध मोक्षमार्ग

सच्चा आनंद किस तरह अनुभव किया जाए?

प्रश्नकर्ता : सच्चे आनंद का किस तरह अनुभव किया जाए?

दादाश्री : सच्चा आनंद, बाह्य किसी तरह से अनुभव नहीं किया जा सकता। इस लौकिक आनंद के लिए इन्द्रियों की ज़रूरत है, लेकिन सच्चे आनंद के लिए इन्द्रियों की ज़रूरत नहीं है। उल्टा इन्द्रियाँ अंतराय करती हैं। सच्चा आनंद तो शाश्वत आनंद है। किसी भी वस्तु का आधार हो, तो वह पौद्गलिक आनंद है। आधार यानी कोई वस्तु मिले, विषयों की वस्तु मिले, मान-तान मिले, लोभ का लाभ हो, वे सब कल्पित, पौद्गलिक आनंद! जगत् विस्मृत करवा दे उसका नाम आनंद, और वही आत्मा का आनंद। आनंद तो निरुपाय आनंद होना चाहिए, मुक्त आनंद होना चाहिए।

अंदर भरपूर आनंद जीव मात्र में भरा पड़ा ही है, लेकिन वह आत्मा का आनंद आना बंद हो गया है। कषाय, क्लेश, राग-द्वेष हो उससे आत्मा के ऊपर आवरण आता है और आनंद चला जाता है। गाय के सींग पर सरसों का दाना रखें और जितनी देर टिके उतनी ही देर यदि आत्मा का आनंद चखे तो वह फिर जाता नहीं, एक बार दृष्टि में बैठ गया इसलिए। सच्चा आनंद लगातार रहता है, बहुत तृप्ति रहती है। उस आनंद का वर्णन नहीं हो सकता।

क्रोध-मान-माया-लोभ की ग़ैरहाज़िरी, वही आनंद है। संसारी आनंद आता है, वह मूर्छा का आनंद है, ब्रान्डी (दारू) पीने जैसा। जगत् ने आनंद देखा ही नहीं है। जो देखा है वह तिरोभावी आनंद देखा है। आनंद में थकान नहीं होती, ऊब नहीं होती। ऊब आए उसका नाम थकान।

यहाँ ज्ञानी के पास सच्चा आनंद प्राप्त होता है उससे कितने ही अवतार के पड़े हुए घाव भर जाते हैं। संसार के घाव तो भरते ही नहीं न! एक घाव भरने लगे, वहाँ दूसरे पाँच पड़ गए होते हैं! आत्मा के आनंद से अंदर सभी घाव भर जाते हैं, उसकी मुक्ति बरतती है!

सुख का शोधन

प्रश्नकर्ता : मैं भी आत्मा को ढूँढ़ रहा हूँ।

दादाश्री : आत्मा को कोई ही मनुष्य ढूँढ़ सकता है। सभी जीव आत्मा को ढूँढ़ते नहीं हैं। ये सभी जीव क्या ढूँढ़ते हैं? सुख को ढूँढ़ते हैं। दु:ख किसी जीव को पसंद नहीं है। छोटे से छोटा जीव हो या मनुष्य हो या स्त्री हो, दु:ख किसीको पसंद नहीं है। अब इन सभी को सुख तो मिलता है, लेकिन किसीको संतोष नहीं है। उसका क्या कारण होगा?

यह सुख, वह सच्चा सुख नहीं है। एक बार सुख स्पर्श कर गया फिर दु:ख कभी भी नहीं आए, उसका नाम सुख कहलाता है। ऐसा सुख ढूँढ़ते हैं! मनुष्य अवतार में उसे (कारण) मोक्ष कहा जाता है। फिर कर्म पूरे हों कि (कार्य) मोक्ष हो गया! लेकिन पहला मोक्ष यहाँ हो ही जाना चाहिए।

कषाय नहीं होने चाहिए। कषाय तुझे होते हैं क्या?

प्रश्नकर्ता : होते हैं।

दादाश्री : कषाय तुझे बहुत पसंद है, ऐसा है?

प्रश्नकर्ता : पसंद तो नहीं, लेकिन होते हैं।

दादाश्री : कषाय, वही दु:ख है! पूरा जगत् कषाय में ही पड़ा हुआ है। लोगों को कषाय पसंद नहीं हैं। लेकिन फिर भी कषायों ने उन्हें घेर लिया है। कषाय के ताबे में ही सब आ गए हैं। इसलिए वे बेचारे क्या करें? गुस्सा कितना भी नहीं करना हो फिर भी हो जाता है।

कषाय किसे कहा जाता है?

प्रश्नकर्ता : कषाय, वह क्या है?

दादाश्री : आत्मा को पीड़ा दें, वे सभी कषाय।

कषाय अर्थात् अंदर आत्मा को (प्रतिष्ठित आत्मा को) दु:ख हुआ करता है, अजंपा हुआ करता है, वह। राग-द्वेष, क्रोध-मान-माया-लोभ ये सब दु:ख देनेवाली वस्तुएँ हैं। उन्हें ही कषाय कहा जाता है।

प्रश्नकर्ता : राग से पीड़ा होती नहीं, फिर भी राग को कषाय क्यों कहा है?

दादाश्री : राग से पीड़ा नहीं होती, लेकिन राग, वह कषाय का बीज है। उसमें से बड़ा पेड़ उत्पन्न होता है!

राग, वह बीज डाला, तब से फिर उसका परिणाम आएगा। उसका परिणाम क्या आएगा? कषाय। द्वेष, वह कषाय की शुरूआत है। मतलब परिणाम आएगा उस दिन द्वेष उत्पन होगा। अभी तो राग है इसलिए मीठा लगता है।

कषायों का आधार

प्रश्नकर्ता : ये कषाय किस आधार पर हैं?

दादाश्री : अज्ञान के आधार पर हैं।

'अज्ञानता' ही इन सबका 'बेसमेन्ट' है। अज्ञानता गई कि पूरा हल निकल आया। अज्ञानता हमारे समझाने से जाती है। अज्ञान जाए फिर कषाय गिरने लगते हैं, यानी राग-द्वेष गिरने लगते हैं। फिर प्रकृति गिरने लगती है। है न आसान रास्ता?

जब तक अहंकार है, 'मैं ही हूँ, मैं ही हूँ', तब तक क्रोध-मान-माया-लोभ एक भी गिरते नहीं।

अहंकार की ही दख़ल है। अहंकार की वज़ह से ही यह जगत् खड़ा रहा है। क्रोध-मान-माया-लोभ अहंकार के अधीन हैं। अहंकार नहीं हो तो वे क्रोध-मान-माया-लोभ हैं, फिर भी नहीं हैं। क्योंकि उनका आधार अहंकार है और अहंकार वह भी आधारी वस्तु है। उसका रूट कॉज़ अज्ञानता है। लेकिन अज्ञानता तो समझो कि है ही, सारी दुनिया में फैली हुई। इसलिए क्रोध-मान-माया-लोभ का आधार क्या? अहंकार। जगत् का आधार कौन? अहंकार! अहंकार निकाल लें तो क्रोध-मान-माया-लोभ कुछ करनेवाले नहीं हैं। सभी मृत हो गए।

यानी, यह ज्ञान मिलने के बाद अज्ञान गया, मतलब अहंकार गया। इसलिए क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं होते हैं, अगर होते हों उसे 'हम' देखें। हमने देखें इसलिए हमें होते नहीं। क्योंकि देखनेवाले को होता नहीं है। बाहर होली सुलगती हो तो आँखें जल जाती है क्या? यानी देखनेवाला जलता नहीं है। और यह अहंकार जिसे होता है न, वह तो क्रोध-मान-माया-लोभ के साथ में होता है, वहाँ तो आँखें भी जलती हैं। क्योंकि वहाँ देखनेवाला नहीं है। खुद अहंकार का कर्त्ता है।

प्रश्नकर्ता : देखनेवाला हुआ, तो अलग हो जाता है?

दादाश्री : हाँ, अलग हो जाता है। मन क्रोध से भरा हुआ हो उसके साथ अहंकार एक हो जाए

तब वह क्रोध कहलाता है, नहीं तो गुस्सा ही कहलाता है। हमने 'सभी' का अहंकार निकाल दिया है। 'इन' लोगों (महात्माओं) को क्रोध-मान-माया-लोभ कुछ करते नहीं। निराधार हो गए न, और आधार बगैर का हुआ फिर गिर जाता है।

कषाय ही खुद के दुश्मन

खुद के कषाय ही खुद के दुश्मन हैं। दूसरा कोई बाहर दुश्मन है ही नहीं। और वे कषाय ही उसे मार रहे हैं। उसे बाहर का कोई मारता नहीं। वास्तव में गुनहगार अपने कषाय हैं।

मनुष्यों को ये क्रोध-मान-माया-लोभ एक क्षण के लिए चैन से बैठने नहीं देते। निरंतर छटपटाहट, छटपटाहट, छटपटाहट! ऐसा आपने देखा है? यह मछली छटपटाती है क्या? पानी के बाहर निकालें तब मछली छटपटाए, वैसे ही ये मनुष्य बिना बाहर निकाले छटपटाते हैं। घर में हों तो भी छटपटाहट, ऑफिस में जाएँ तो भी छटपटाहट, पूरा दिन छटपटाहट! अब यह छटपटाहट मिट जाए तो कितना आनंद रहेगा? देखो, हमारी छटपटाहट मिट गई है तो कैसी-कैसी बातें निकलती हैं न? पूरे जगत् को छटपटाहट, छटपटाहट, छटपटाहट रहनेवाली है। इन्हें तो अच्छा भोजन हो तो भी खाते समय भी अंदर छटपटाहट बंद नहीं होती है। बोलो, किस तरह जीया जाता है, वह भी आश्चर्य है न?

कषायों का कारण, भ्रांति

अब जब तक मनुष्य को भ्रांति है, तब तक विनाशी और अविनाशी एक रूप में ही बरतते हैं। एक रूप में बरते तब क्या करता है? 'यह जानता हूँ मैं और यह करता हूँ मैं' ऐसा बोलता है। मतलब दोनों के धर्म एकसाथ बोलता है, विनाशी के धर्म और अविनाशी के धर्म दोनों एकसाथ बोलता है और साथ में बोले, उसीका नाम ही भ्रांति! फिर 'मैं ही चंदूभाई हूँ' ऐसा बोलता है। 'खुद' अविनाशी होने के बावजूद भी 'खुद' 'मैं ही चंदूभाई हूँ' ऐसा बेभानपने से बोलता है। उसका कारण क्या है? कि अविनाशी और विनाशी दोनों एकत्र हो गए हैं, एकाकार हो गए हैं। इसलिए एकाकार से यह भ्रांति उत्पन्न हुई है। और इस भ्रांति में तो क्या करता है? 'जानता हूँ मैं और करता हूँ मैं' इसलिए फिर ये क्रोध-मान-माया-लोभ सभी कमज़ोरियाँ खड़ी हो गई हैं।

जहाँ क्रोध-मान-माया-लोभ हैं वहाँ कुछ भी जाना नहीं है, वहाँ सब कमज़ोरियाँ ही हैं। जाना तो उसका नाम कि सारी कमज़ोरियाँ चली जाएँ।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह भ्रांति तो अविनाशी की ही बनाई हुई है न?

दादाश्री : बनाई हुई किसीने नहीं है, अविनाशी बनाता नहीं है यह। समझ में आया न? यह भ्रांति तो वैज्ञानिक कारणों से खड़ी हो गई है। बाकी, कोई भ्रांति बनाता नहीं है!

साम्राज्य किसका?

प्रश्नकर्ता : व्यक्ति में विनाशी और अविनाशी दोनों साथ में हों, तो जो वर्तन करते हों, वह तो अविनाशी का ही होता है न? क्योंकि अविनाशी का ही साम्राज्य चलता है न?

दादाश्री : साम्राज्य अविनाशी का है ही नहीं बिलकुल भी! वर्तन भी अविनाशी का नहीं है। यह तो साम्राज्य ही पूरा विनाशी का है। इसलिए हम, विनाशी और यह अविनाशी, ऐसे दो भाग अलग कर देते हैं। पापों को भस्मीभूत करें तो वे दोनों भाग अलग होते हैं, तो फिर दोनों अलग हो जाते हैं। फिर आत्मा ज्ञाता-दृष्टा रहता है। मतलब अविनाशी उसके मूल स्वभाव में आ जाता है और विनाशी जो है वह इस क्रिया में रहता है। यह विनाशी को जानने का स्वभाव नहीं है। भावुकता या ऐसा कोई स्वभाव इस विनाशी में नहीं है। फिर विनाशी जो है वह इन क्रियाओं में रहता है और अविनाशी ज्ञाता-दृष्टा रहता है, दोनों अपने-अपने स्वभाव में रहते हैं।

यथार्थ निष्काम कर्म

प्रश्नकर्ता : निष्काम कर्म में किस तरह कर्म बँधते हैं?

दादाश्री : 'मैं चंदूभाई हूँ' करके निष्काम कर्म करने जाओ तो 'बंधन' ही है। निष्काम कर्म करने से यह संसार अच्छी तरह से चलता है। वास्तव में निष्काम कर्म, 'खुद कौन है' वह नक्की हुए बगैर हो ही नहीं सकता। जब तक क्रोध-मान-माया-लोभ हों, तब तक निष्काम कर्म किस तरह हो सकता है?

खुद ही मानता है कि 'यह मैं निष्काम कर्म करता हूँ।' लेकिन वास्तव में उसका कर्त्ता कोई और ही है। जिस-जिस प्रकार की क्रिया होती है, वह सब 'डिस्चार्ज' है। 'मैं निष्काम कर्म करता हूँ' ऐसा मानता है, वही सब बंधन है। निष्काम कर्म का कर्त्ता है तब तक बंधन है।

वह निष्काम कर्म किसे कहते हैं? अपने घर की आय आती है। ज़मीन की आती है, उसके अलावा यह छापाखाना खोला उसमें से मिलेगी। ऐसे, बारह महीनों में बीस-पच्चीस हज़ार मिलेंगे, ऐसा अनुमान लगाकर करने जाएँ, और फिर पाँच हज़ार मिलें तो बीस हज़ार का घाटा हुआ, ऐसा लगता है। और धारणा ही नहीं रखी हो तो? निष्काम कर्म यानी उसके आगे के परिणाम का अनुमान लगाए बगैर करते जाओ। कृष्ण भगवान ने बहुत सुंदर वस्तु दी है, लेकिन किसीसे वह हो सकता नहीं न? मनुष्य की बिसात नहीं न! इस निष्काम कर्म को यर्थाथ समझना मुश्किल है। इसलिए तो कृष्ण भगवान ने कहा था कि मेरी गीता का सूक्ष्मतम अर्थ समझनेवाला कोई एकाध ही होगा!

शांति मिले सच्चे उपदेशक से

प्रश्नकर्ता : जीवन में शांति चाहिए, तो वह शांति किस तरह मिलेगी?

दादाश्री : उपदेशक सच्चा मिले तब। सच्चा उपदेशक किसे कहा जाता है? जिनमें अशांति हो ही नहीं। बिलकुल भी क्रोध-मान-माया-लोभ की कमज़ोरी नहीं हो, जो पैसे नहीं लेते हों, विषय और लक्ष्मी संबंधी विचार नहीं आते हों, वहाँ सच्ची शांति मिलती है। दूसरी जगह पर शांति होगी ही कैसे?

शांति बढ़े, क्लेश हो नहीं, उसका नाम धर्म कहलाता है। इतना-इतना धर्म करते हैं। फिर भी क्रोध-मान-माया-लोभ, ये कमज़ोरियाँ उतनी की उतनी ही रहती हैं। आपको क्या लगता है? अशांति कम नहीं होनी चाहिए? साबुन डालकर कपड़े का मैल कम नहीं होता? यानी वह (सच्चा) मार्ग नहीं है।

कषाय का निवारण करे वह धर्म

कषाय भाव कम हों ऐसे नहीं हैं, बढ़ें ऐसे हैं। वह खुद अपने आप कम करने से नहीं होते, लेकिन धर्म से ही कम होते हैं। धर्म कहाँ से प्राप्त होना चाहिए? 'ज्ञानी पुरुष' के पास से, हस्ताक्षर-मुहरवाला धर्म होना चाहिए। 'ज्ञानी पुरुष' के फिर दो शब्द भी इस्तेमाल करने लगे कि जो शब्द वचनबलवाले होते हैं, अंदर बल देनेवाले होते हैं, जागृति में रखनेवाले होते हैं, वे शब्द आवरण को भेदकर अंदर की शक्तियाँ प्रकट करते हैं।

परिणमित हो वह धर्म

धर्म किसे कहा जाता है?

जो धर्म होकर परिणमित हो, वह धर्म। यानी कि अंदर परिणमित होकर कषाय भावों को (क्रोध-मान-माया-लोभ) कम करे।

परिणमित हो वह धर्म और परिणमित नहीं हो वह अधर्म।

परिणमित क्या होता है? तब कहे, कषाय भाव को हलका करे, कम करे, हलका-पतला करे और जैसे वह कषाय भाव कम होते जाते हैं वैसे खुद की शक्ति, आनंद बढ़ता जाता है। खुद की सारी

शक्ति मालूम पड़ती है कि अहो! भीतर खुद की कैसी शक्ति है! इतनी सारी खुद में शक्ति कहाँ से आई? यानी धर्म इसका नाम कहलाता है। नहीं तो यह लट्टू तो वैसे का वैसा ही रहता है, बचपन से लेकर अर्थी उठने तक वैसे का वैसा ही रहता है। तो उसे धर्म किस तरह कहा जाए?

धर्म होकर परिणमित होता है। तब, परिणाम क्या प्राप्त करना है? व्रत, नियम, तप करना सीखे, वह? नहीं, वह नहीं है परिणाम। क्रोध-मान-माया-लोभ का - कषायों का निवारण करे उसका नाम धर्म, और अधर्म तो कषायों को बढ़ाता है। तब कुछ लोग कहते हैं न कि रोज़ (लौकिक) सामायिक, प्रवचन, ध्यान करते हैं न? क्या वह धर्म नहीं है? भगवान कहते हैं कि नहीं, वह धर्म नहीं हो सकता। धर्म, (ऐसी) सामायिक आदि में नहीं है, धर्म तो परिणमित हो उसमें है। धर्म तो कषाय भाव का निवारण करे, वह है। कषाय भाव तो दबाने से दबाया नहीं जा सकता, या उसे छीलते रहें, रंदा मारते रहें तो भी कुछ होता नहीं है।

धर्म पूर्णरूप से परिणमित हो तब 'खुद' ही धर्मस्वरूप हो जाता है!

तुरन्त फल दे वह धर्म

धर्म तो किसे कहते हैं? जो तुरन्त फल दे। तुरन्त फल देनेवाला हो, तो ही धर्म, नहीं तो अधर्म। यह क्रोध, तुरन्त ही फल देता है न? जैसे अधर्म तुरन्त फल देता है, वैसे धर्म का फल भी तुरन्त ही मिलना चाहिए। स्वरूप का अज्ञान गया नहीं तब तक यदि सच्चा धर्म करे तो भी उसके घर में क्लेश नहीं हो। जहाँ कषाय है वहाँ धर्म ही नहीं है। कषाय है वहाँ लोग धर्म ढूँढ रहे हैं, वही आश्चर्य है! लोगों में परीक्षा करने का सामर्थ्य ही नहीं है। सम्यक् दर्शन प्राप्त होने के बाद उसे संसार अच्छा ही नहीं लगता। इसलिए सम्यक् दर्शन क्या कहता है कि, 'मुझे प्राप्त करने के बाद तुझे मोक्ष में जाना ही पड़ेगा! इसलिए मुझे अपनाने (सेवन) से पहले सोच लेना।' इसलिए तो कवि ने गाया है न कि,

'जिनकी रे संतो, कोटि जन्मों की पुण्याई जागे,
उनको रे संतों, दादा के दर्शन होवे रे,
घट में उनको खटकारा खट-खट बाजे रे।'

खटकारा यानी क्या कि एक बार 'दादा' से मिला तो फिर वापिस यहाँ दर्शन करने का मन हुआ करता है। इसलिए हम कहते हैं कि, 'यदि तुझे वापिस जाना हो तो मुझे मिलना मत और मिला यानी तुझे मोक्ष में जाना पड़ेगा। यदि तुझे चार गति में जाना हो तो वह भी दूँ। यहाँ तो मोक्ष की मुहर लग जाए, तो मोक्ष में जाना ही पड़ता है।' हम तो आपसे कहते हैं कि यहाँ फँसना नहीं और फँसने के बाद निकल नहीं सकोगे।

कषाय का अभाव, वह वीतराग धर्म

कषाय करने के लिए यह धर्म नहीं है। यह रियल धर्म है। कषाय का अभाव करने के लिए यह धर्म है। कषाय का अभाव, उसे वीतराग धर्म कहा जाता है। और कषाय की जहाँ हाज़िरी हो, जहाँ कषाय का वातावरण हो, वहाँ रिलेटिव धर्म कहा जाता है। मतलब भौतिक सुख मिलते हैं, उस धर्म में, लेकिन मोक्ष सुख नहीं मिलता। खुद का आनंद नहीं मिलता।

अज्ञान से मुक्ति वह मोक्ष

प्रश्नकर्ता : मोक्ष या मुक्ति किसे कहा जाता है?

दादाश्री : मोक्ष और मुक्ति, वे नज़दीक के ही शब्द हैं। एक ही माँ के दो बच्चे हैं।

यदि सर्व कर्मों से मुक्ति चाहते हो, पूरा मोक्ष चाहते हो तो पहली मुक्ति अज्ञान से होनी चाहिए। यानी आप अज्ञान से ही बँधे हुए हो। यदि अज्ञान जाए तो सबकुछ सरल हो जाता है, शांति होती है,

दिन-ब-दिन आनंद बढ़ता जाता है और कर्म से मुक्ति होती है।

कोई कहे कि, 'आपके क्रोध-मान-माया-लोभ निकाल दो।' तब हम कहें कि, 'साहब, यह तो मैं भी जानता हूँ। लेकिन ऐसा कुछ कहिए कि जिससे मेरे क्रोध-मान-माया-लोभ चले जाएँ।' ऐसे ही चलाते रहे उसका क्या अर्थ है? वचनबलवाले पुरुष के पास जाएँ, चारित्रबलवाले पुरुष के पास जाएँ फिर क्रोध-मान-माया-लोभ को जाना पड़ता है। कमज़ोर मनुष्य से उसकी कमज़ोरियाँ खुद से चली जाती हो तो फिर बलवान मनुष्य का क्या काम है?

लोग धर्म का सुनने जाते हैं, उसे श्रुतज्ञान कहते हैं। लेकिन श्रुतज्ञान तो उसका नाम कहलाता है कि जो सुनने के बाद अपना रोग अपने आप निकले।

मोक्षप्राप्ति का मार्ग

प्रश्नकर्ता : मोक्ष किस तरह मिलता है?

दादाश्री : उसकी रीति नहीं होती। आर्तध्यान और रौद्रध्यान चले जाएँ तब मोक्ष मिलता है।

प्रश्नकर्ता : फिर भी मोक्ष प्राप्त करने का रास्ता कौन-सा होगा? किसके पास से मोक्ष मिल सकता है?

दादाश्री : मोक्ष तो केवल 'ज्ञानी पुरुष' के पास से ही मिलता है। जो मुक्त हुए हों वे ही हमें मुक्त करवा सकते हैं। खुद बँधा हुआ दूसरों को किस तरह छुड़ा सकता है? यानी, हमें जिस दुकान पर जाना हो उस दुकान पर जाने की छूट है। लेकिन वहाँ पूछना कि, 'साहब, मुझे मोक्ष देंगे?' तब कहे कि, 'नहीं, मोक्ष देने की हमारी तैयारी नहीं है।' फिर हमें दूसरी दुकान, तीसरी दुकान पर जाना चाहिए। किसी जगह पर हमारी ज़रूरत का माल मिल जाएगा। लेकिन एक ही दुकान पर बैठे रहें तो? तो फिर टकराकर मर जाना। अनंत अवतार से ऐसे भटकते रहने का कारण ही यह है कि हम एक ही दुकान पर बैठे रहे हैं, खोज भी नहीं की। 'यहाँ बैठने से हमें मुक्ति का अनुभव होता है या नहीं? अपने क्रोध-मान-माया-लोभ कम हुए?' वह भी नहीं देखा।

ब्याहना हो तो पता लगाता है कि कौन-सा कुल है, ननिहाल कहाँ है? सब 'रियलाइज़' करता है (तलाश करे)। लेकिन इसमें 'रियलाइज़' नहीं करता। कितना बड़ा 'ब्लंडर' (भूल) कहलाता है यह?

प्रश्नकर्ता : वीतराग दशा प्राप्त करने के लिए सबसे प्रथम पायदान कौन-सा है?

दादाश्री : सच्चा तो मोक्ष में जाना है।

प्रश्नकर्ता : मोक्ष तो बाद में मिलता है न?

दादाश्री : अभी देह का मोक्ष नहीं है, लेकिन आत्मा का मोक्ष तो होता है न! इस काल की वज़ह से इस क्षेत्र से देह का मोक्ष अटका हुआ है, लेकिन आत्मा का मोक्ष तो होता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, होता है।

दादाश्री : तब इतना हो जाए तो भी बहुत हो गया।

प्रश्नकर्ता : मोक्ष प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए? आप उपाय बताइए?

दादाश्री : उपाय मैं आपको बतलाऊँ, लेकिन वह आपसे होगा नहीं। घर जाकर भूल जाओगे। इस काल में लोगों की इतनी स्थिरता नहीं होती। उसके बजाय हमारे पास आना, एक घंटे में ही आपको नक़द मोक्ष दे देंगे। फिर आपको कुछ भी करना नहीं है। सिर्फ हमारी आज्ञा में रहना है।

सद्गुरु की पहचान क्या?

प्रश्नकर्ता : सद्गुरु की पहचान क्या है?

दादाश्री : सद्गुरु वही कि रात-दिन जिन्हें आत्मा का उपयोग हो। शास्त्र में पढ़ी नहीं हो, कहीं भी सुनी नहीं हो, फिर भी अनुभव में आए ऐसी जिनकी अपूर्व वाणी हो!

प्रश्नकर्ता : ये ही सद्गुरु हैं, ऐसा कैसे कह सकते है?

दादाश्री : यहाँ ठंडक लगे तो समझना कि ये सद्गुरु हैं।

प्रश्नकर्ता : सद्गुरु के लक्षण क्या हैं?

दादाश्री : कषाय - क्रोध-मान-माया-लोभ रहित परिणाम!

प्रश्नकर्ता : इस काल में सद्गुरु कहाँ-कहाँ बिराजते हैं?

दादाश्री : यह आपके समक्ष बिराजे हैं।

प्रश्नकर्ता : सद्गुरु पाने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : परम विनय।

प्रश्नकर्ता : सम्यक्त्व, बीजज्ञान अथवा बोधबीज वे धर्म के मूल माने जाते हैं तो उनकी प्राप्ति किसके द्वारा होती है?

दादाश्री : कषाय रहित सद्गुरु से!

प्रश्नकर्ता : धर्म की उत्पत्ति अर्थात् धर्म किससे होता है?

दादाश्री : कषाय रहित सद्गुरु से।

प्रश्नकर्ता : कौन-सी क्रिया से अथवा क्या करने से धर्म होता है?

दादाश्री : ज्ञान क्रिया और दर्शन क्रिया से धर्म होता है।

प्रश्नकर्ता : धर्म का साधन क्या है? धर्म किसे कहते हैं?

दादाश्री : धर्म का साधन, उपादान जागृत होना चाहिए, और धर्म किसे कहा जाता है? खुद के कषाय कम हो जाएँ तो समझना कि धर्म उत्पन्न हुआ है। कषाय कम हो तो जानना कि धर्म हुआ है।

प्रश्नकर्ता : किस तरह धर्म में स्थिर हो सकते हैं?

दादाश्री : उपादान जागृत करने से धर्म में स्थिर हो सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : मोक्ष का सरल उपाय क्या है?

दादाश्री : कषाय रहित 'ज्ञानी पुरुष' की सेवा से मोक्षमार्ग सरल हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : कौन-कौन से साधन से मोक्ष होता है?

दादाश्री : ज्ञान से मोक्ष होता है। सद्ज्ञान से, आत्मज्ञान से मोक्ष होता है।

कहाँ तक की कमी निभाई जाए?

प्रश्नकर्ता : गुरु की गति गहन होती है, इसलिए उनका पूर्व परिचय हो, तब समझ में आता है। नहीं तो बाह्य आडंबर से पता नहीं चलता।

दादाश्री : दस-पंद्रह दिन साथ में रहो तब चंचलता मालूम पड़ती है और जब तक वे चंचल हैं न, तब तक हमारे दिन फिरेंगे नहीं। वे अचल हुए होने चाहिए।

दूसरा, उनमें क्रोध-मान-माया-लोभ का कोई भी परमाणु नहीं रहना चाहिए, या तो थोड़ा कुछ अंश तक कम हुआ हो तो चलेगा, चला सकते हैं। लेकिन एकदम जोशबंध से हों तो फिर, अपने में भी हैं और उनमें भी हैं, तो फिर हमारे पास क्या आया? यानी जो कषायों से भरे हुए हैं, उन्हें गुरु नहीं बनाया जा सकता। ज़रा-सा छेड़ो तो फ़न फैलाएँ, तो गुरु की तरह नहीं रख सकते उन्हें। जो अकषायी हो या फिर

मंद कषायवाले हों, तो उन्हें गुरु बना सकते हैं। मंद कषाय यानी मोड़ सके ऐसी दशा होती है, खुद को क्रोध आने से पहले क्रोध को मोड़ ले, यानी खुद के कंट्रोल में आए हुए होने चाहिए। तो ऐसे गुरु चलते हैं। जब कि ज्ञानी पुरुष में तो क्रोध-मान-माया-लोभ होते ही नहीं, वे परमाणु ही नहीं होते हैं। क्योंकि खुद अलग रहते हैं, इस देह से-मन से-वाणी से सभी से अलग रहते हैं!

कषाय जाएँ ज्ञान द्वारा

प्रश्नकर्ता : क्रोध-मान-माया-लोभ को छोड़ने का रास्ता, वह ज्ञान ही है? और वह ज्ञान इस काल के लिए समन्वित है?

दादाश्री : सच्चा ज्ञान तो उसका नाम कहलाए कि जो क्रोध-मान-माया-लोभ को उड़ा दे।

प्रश्नकर्ता : उसे प्राप्त कैसे करें?

दादाश्री : वही ज्ञान यहाँ आपको देता हूँ। इन सभी को (जिन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ है) क्रोध-मान-माय-लोभ, सबकुछ उड़ ही गया है।

प्रश्नकर्ता : हृदय की सरलता आनी इतनी आसान है?

दादाश्री : सरलता आनी या नहीं आनी वह तो पूर्वभव का हिसाब है, उसका 'डेवलपमेन्ट' है। जितना सरल हो उतना ज़्यादा उत्तम कहलाता है। लेकिन वह 'क्रमिक मार्ग' का है। उसमें सरल मनुष्य धर्म को पाता है, किन्तु उसमें करोड़ अवतारों में भी मोक्ष का ठिकाना नहीं पड़ता। और यह 'अक्रम विज्ञान' है। यह एक ही अवतारी (हो सके ऐसा) ज्ञान है। और यदि इस ज्ञान की आराधना हमारी आज्ञापूर्वक करने में आए न तो निरंतर समाधि रहती है! आप डॉक्टर की लाइन (का धंधा) करो तो भी निरंतर समाधि रहती है। कुछ भी बाधक ही नहीं होगा और छूएगा भी नहीं। यह तो बहुत ऊँचा विज्ञान है। इसलिए कविराज कहते हैं कि दस लाख वर्षों में भी ऐसा हुआ नहीं है, वैसा यह हुआ है।

'आत्मप्राप्ति' के लक्षण

प्रश्नकर्ता : मैंने मेरे आत्मा को पहचाना हो, तो मुझमें कौन-से लक्षणों की शुरूआत होगी? मुझमें कैसा परिवर्तन होगा कि जिससे मैं समझ सकूँ कि मैं रास्ते पर हूँ?

दादाश्री : पहला तो 'इगोइज़म' (अहंकार) बंद हो जाता है। दूसरा, क्रोध-मान-माया-लोभ चले जाएँ, तो समझना कि आप आत्मा हो गए! ऐसे लक्षण आपको हुए हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं, वैसे तो अभी नहीं हुए हैं।

दादाश्री : मतलब वे लक्षण उत्पन्न हो तो फिर समझना कि आप आत्मस्वरूप हुए हो। अभी आप 'चंदूभाई' स्वरूप हो! अभी कोई कहे कि, 'यह डॉक्टर चंदूभाई ने मेरा केस बिगाड़ दिया।' फिर आपको यहाँ बैठे-बैठे असर होता है या नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : असर तो होता है।

दादाश्री : मतलब आप 'चंदूभाई' हो! और इस 'अंबालाल' (व्यवहार में दादाश्री का नाम) को कोई गालियाँ दे, तो 'मैं' इस 'अंबालाल' से कहूँ कि, 'देखो, आपने कहा होगा, इसलिए यह आपको गालियाँ देता है!' हमें एकदम जुदापन ही अनुभव में आता है। आपका भी अलग पड़ जाए, तो फिर 'पज़ल' सोल्व हो गया। नहीं तो रोज़ 'पज़ल' खड़े होते ही रहते हैं!

क्रोध-मान-माया-लोभ की खुराक

क्रोध-मान-माया-लोभ निरंतर हमारा ही चुराकर खाते हैं, लेकिन लोगों की समझ में नहीं आता है। इन चारों को यदि तीन साल भूखे रखो तो वे भाग जाएँगे। परन्तु वे जिस खुराक से जी रहे हैं वह कौन-सी खुराक? वह यदि जानो नहीं तो वे किस

तरह भूखे मरेंगे? उसकी समझ नहीं होने से उन्हें खुराक मिलती ही रहती है। वे जीते हैं किस तरह? और वह भी फिर अनादिकाल से जी रहे हैं! इसलिए उनकी खुराक बंद कर दो। ऐसा विचार तो किसीको नहीं आता और सभी मार-ठोककर उन्हें निकालने के लिए प्रयत्न करते हैं। वे चारों तो ऐसे जाएँ वैसे नहीं हैं। वे तो आत्मा बाहर निकले फिर अंदर सबकुछ झाड़-बुहारकर साफ करके बाद में निकलते हैं। उन्हें हिंसक मार नहीं चाहिए। उन्हें तो अहिंसक मार चाहिए।

गुरु शिष्य को कब झिड़कता है? क्रोध होता है तब। उस समय कोई कहे, 'महाराज, इसे किसलिए झिड़कते हो?' तब महाराज कहे, 'वह तो झिड़काने जैसा ही है।' बस खतम, ऐसा बोले, वह क्रोध की खुराक। किए हुए क्रोध का रक्षण करे वही उसकी खुराक।

कोई कंजूस स्वभाव का आपको चाय की पुड़िया लाने को कहे और आप तीस रुपये की लाएँ तो वह कहता है कि, 'इतनी महँगी तो लाई जाती होगी?' ऐसा बोला, उससे लोभ को पोषण मिलता है। और कोई अस्सी रुपये की चाय की पुड़िया लाया तो फिज़ूलखर्च मनुष्य कहे कि, 'यह अच्छी है।' तो वहाँ पर भी फिज़ूलखर्ची के लोभ को पोषण मिलता है, यह हुई लोभ की खुराक। हमें तो नोर्मल रहना चाहिए।

अब, कपट क्या खाता होगा? रोज़ कालाबाज़ारी करता हो, लेकिन कपट की बात निकले तब मुआ बोल उठे कि, 'ऐसे कालाबाज़ारी हम नहीं करते।' ऐसे वह ऊपर से साहुकारी दिखाता है, वही कपट की खुराक।

और मान की खुराक क्या? नगीनभाई सामने मिले और हम कहें कि, 'आइए नगीनभाई।' तब नगीनभाई का सीना चौड़ा हो जाता है, अकड़ जाता है और खुश होता है, यह मान की खुराक।

आत्मा के अलावा सभी खुराक से जी रहे हैं। हम तो इन चारों से, क्रोध-मान-माया-लोभ से कहते हैं कि, 'आओ, बैठो' लेकिन उन्हें खुराक नहीं देते।

क्रोध-मान-माया-लोभ, ये चारों किससे खड़े होते हैं? खुद की ही प्रतिष्ठा से। ज्ञानी पुरुष उस प्रतिष्ठा में से उठाकर, उसकी जगत्निष्ठा उठाकर ब्रह्म में, स्वरूप में बिठा देते हैं और ब्रह्मनिष्ठ बना देते हैं, तब इन चारों से छुटकारा होता है!

ज्ञानी पुरुष चाहे सो करें! ये क्रोध-मान-माया-लोभ वे तो आत्मा-अनात्मा, ज्ञान-अज्ञान के बंधनरूप हैं, ज़ंजीर हैं। नहीं तो अनासक्त भगवान को आसक्ति कहाँ से?

भवोंभव से नि:शंकता

'खुद कौन है' उस पर ही देखो किसीको शंका पड़ती नहीं है न! महान-महान आचार्यों को-साधुओं को भी अपना जो नाम है, उस पर शंका हुई नहीं किसी दिन! यदि शंका पड़े तो भी हम समझें कि सम्यक् दर्शन होने की तैयारियाँ हो रही है। वह शंका ही होती नहीं है न, पहले! उल्टा उसे ही मज़बूत करते हैं और ये सब क्रोध-मान-माया-लोभ उसकी वज़ह से हैं। यह असत्य की पकड़ पकड़ी है, मतलब सत्य रूप में उसका भान हुआ है कि यह सत्य ही है। असत्य की बहुत बार पकड़ पकड़ने में आए, उसके बाद वह उसके लिए सत्य हो जाता है। प्रगाढ़ रूप से असत्य करने में आए तो फिर सत्य हो जाता है। फिर उसे असत्य है ऐसा भान ही नहीं होता, सत्य ही है ऐसा रहता है।

यानी यहाँ यदि शंका पड़े तो क्रोध-मान-माया-लोभ सब चले जाते हैं। लेकिन यह शंका पड़ती नहीं न! किस तरह पड़े? कौन डाल दे यह? भवोंभव से नि:शंक हुआ हो उस बाबत में खुद को शंका पड़े, ऐसा कौन करा दे? जिस भव में गया वहाँ पर जो नाम पड़ा, वहाँ उसे ही सत्य माना। शंका ही पड़ती नहीं न! कितनी सारी मुश्किलें है! और उस

वज़ह से ये क्रोध-मान-माया-लोभ खड़े रहे हैं न! आप यदि 'शुद्धात्मा' हो तो क्रोध-मान-माया-लोभ की ज़रूरत नहीं है। और आप यदि 'चंदूभाई' हो तो क्रोध-मान-माया-लोभ की ज़रूरत है। सारे शास्त्रों का 'सोल्युशन' यहाँ पर, केवल यही जानने से हो जाता है! लेकिन वह आत्मज्ञान जानें किस तरह? और आत्मज्ञान जानने के बाद कुछ भी जानना बाकी नहीं रहता।

संसार चले कषायों की सत्ता से

ये कषाय चैन से घड़ीभर बैठने नहीं देते। बेटे की शादी के समय मोह ने घेर लिया होता है! तब मूर्छा होती है। बाकी कलेजा तो पूरा दिन चाय की तरह उबलता रहता है! फिर भी मन में होता है 'मैं तो जेठानी हूँ न!' ये सगाइयाँ सच्ची नहीं हैं, यह तो सांसारिक ऋणानुबंध हैं। यह तो व्यवहार है, नाटक करना है। यह देह छूटा फिर दूसरी जगह नाटक करना है।

चिकनी पट्टी शरीर पर चिपकाई हो तो उसे उखाड़ें तो भी वह उखड़ती नहीं, बाल को साथ खींचकर उखड़ती है, वैसे ही यह संसार चिकना है। 'ज्ञानी पुरुष' दवाई दिखलाए तो वह उखड़े। यह संसार छोड़ने से छूटे ऐसा नहीं है। जिसने संसार छोड़ा है, त्याग किया है वह उसके कर्म के उदय ने छुड़वाया है। सबको अपने-अपने उदयकर्म के आधार पर त्यागधर्म या गृहस्थीधर्म मिला होता है। समकित प्राप्त हो तब से सिद्धदशा प्राप्त होती है।

अज्ञानता के परिणाम से परिभ्रमण

प्रश्नकर्ता : मृत्यु के बाद आत्मा की कैसी स्थिति होती है?

दादाश्री : अभी है वैसी की वैसी ही स्थिति होती है। उसकी स्थिति में कोई फर्क पड़नेवाला नहीं है। सिर्फ यहाँ से मरता है, तब यह स्थूल देह छोड़ देता है, दूसरा कुछ छोड़ता-करता नहीं है। दूसरे संयोग साथ में ही ले जाता है। दूसरे कौन-से संयोग? तब कहे, 'कर्म बाँधे हैं न, वे' फिर क्रोध-मान-माया-लोभ और सूक्ष्म शरीर, वे सब साथ में ही जानेवाले हैं। यह स्थूल देह अकेला यहाँ पड़ा रहता है। यह कपड़ा (देह) बेकार हुआ इसलिए छोड़ देता है।

प्रश्नकर्ता : और दूसरा देह धारण करता है?

दादाश्री : हाँ, दूसरा कपड़ा बदलता है सिर्फ, और कोई फेरफार होता नहीं है। क्योंकि जब तक अज्ञान है तब तक बीज डालता ही रहता है, बीज डालने के बाद ही आगे चलता है, और ज्ञान होता है फिर छुटकारा होता है। 'खुद कौन है' उसका भान हो तब छुटकारा होता है।

आत्मा के साथ क्या जानेवाला है?

प्रश्नकर्ता : मेरा पुनर्जन्म हो तो मेरा आत्मा साथ में ही जाता है न?

दादाश्री : साथ में ही जाएगा न! यहाँ से यह आत्मा निकलता है। तब कषाय इस शरीर में से, जो कुछ हो न वह झाड़-बुहारकर निकलते हैं। क्योंकि खुद की जो 'रोंग बिलीफ़' है न कि 'यह मैं हूँ', यानी 'मैं हूँ' हुआ वहाँ पर सब 'मेरा' हुआ और 'मेरा' हुआ, फिर ये क्रोध-मान-माया-लोभ खड़े हो जाते हैं। आत्मा निकलता है उसके बाद क्रोध-मान-माया-लोभ झाड़-बुहारकर बाहर निकलते हैं। वे भी फिर थोड़ी देर के बाद सब झाड़-बुहारकर अंदर देह में कुछ रह नहीं जाए इस तरह निकलते हैं, ऐसे कषाय हैं।

अब आत्मा के साथ और क्या-क्या जाता है? 'कारण शरीर', वह 'कॉज़ल बॉडी' है और 'सूक्ष्म शरीर', उसे 'इलेक्ट्रिकल बॉडी' कहा जाता है। जब तक यह स्थूल देह होती है, जब तक संसारी है, तब तक हरएक जीव में 'इलेक्ट्रिकल बॉडी' होती है और जब मोक्ष में जाता है तब 'इलेक्ट्रिकल बॉडी' छूट जाती है और आत्मस्वरूप अकेला ही जाता है।

यह तो पूरा दिन मेरा और तेरा, मेरा और तेरा, करता रहता है! और उसमें खुद कुछ भी साथ में ले जाता नहीं! दूसरे जन्म में कौन-कौन सी चीज़ें साथ ले जानेवाले हैं आप? यहाँ किसीके साथ झगड़ा किया, वह गुत्थियाँ साथ ले जानी हैं, किसीको दान दिया वह साथ में ले जाना है और अहंकार तो साथ में ही ले जाना है। इन सारी गुत्थियों का मालिक अहंकार, वह तो साथ ही रहनेवाला है। क्रोध-मान-माया-लोभ और अहंकार तो साथ में ही आते हैं।

लेखे-जोखे के अनुसार नया हिसाब

प्रश्नकर्ता : अभी मुझमें जो अहंकार है, अभी यहीं हार्ट फेइल हो गया तो वह अहंकार साथ में जाता है या कम-ज़्यादा जाता है, या उतने का उतना ही जाता है? या दूसरे जन्म में नया खड़ा होता है?

दादाश्री : नया खड़ा होता है। पिछला पूरा विलय हो जाता है। नया हिसाब होता है, वह अहंकार, क्रोध-मान-माया-लोभ सब नया, पुराना नहीं।

प्रश्नकर्ता : वह नया कम-ज़्यादा किस आधार पर होता है? दोनों साथ में जन्मे होते हैं, एक स्त्री को दो बच्चे जन्में, उन्हें?

दादाश्री : यह नया। लेकिन वह तो लेखा-जोखा है इसलिए, उसके पास जो माल है न पूरी ज़िन्दगी का, उसका लेखा-जोखा लेकर जाता है।

प्रश्नकर्ता : पिछला है न?

दादाश्री : यह, माल है न वह मूल तो पिछला ही। पिछला यानी उसका अर्थ ऐसा नहीं, आप आज कहते हों, वैसा नहीं। पूरी ज़िन्दगी आपने जो किया है न उसके सार के रूप में होता है, और आपके क्रोध-मान-माया-लोभ तो विलय हो ही जाते हैं, इस भव में। अभी जो है, वह पिघल जाता है।

प्रश्नकर्ता : फिर वह खड़ा कहाँ से होता है, तब? बच्चे का जन्म हुआ, उसके बाद फिर वह अहंकार खड़ा कहाँ से होता है?

दादाश्री : वह प्रकट होता है, खड़ा नहीं होता। जो अप्रकट था, वही प्रकट होता है।

प्रश्नकर्ता : मतलब साथ में तो होता ही है न?

दादाश्री : हाँ, होता ही है। हाँ, लेकिन सारा माल तो पिछला ही, परन्तु पिछला यानी पिछले अवतार का माल नहीं। पिछले अवतार के क्रोध-मान-माया-लोभ तो विलय हो गए और जो पिछले अवतार में दूसरे हिसाब बाँधे थे, उसके सार के रूप में निकलता है, उस हिसाब का सार निकलता है।

कर्म की थियरी

प्रश्नकर्ता : सब यहीं का यहीं ही भुगतना है, ऐसा कहते हैं। वह क्या है?

दादाश्री : हाँ, भुगतना यहीं का यहीं ही है, लेकिन वह इस जगत् की भाषा में। अलौकिक भाषा में उसका अर्थ क्या होता है?

पिछले अवतार में कर्म अहंकार का, मान का बँधा हुआ होता है, तो इस अवतार में उसके सारे बिल्डिंग बन रहे हों, तो फिर वह उसमें मानी होता है। किस वजह से मानी होता है? कर्म के हिसाब से वह मानी होता है। अब मानी हुआ, उसे जगत् के लोग क्या कहते है कि, 'यह कर्म बाँधता है, यह ऐसा मान लेकर घूम रहा है।' जगत् के लोग इसे कर्म कहते हैं। जब कि भगवान की भाषा में यह कर्म का फल आया। फल अर्थात् मान नहीं करना हो तो भी करना ही पड़ता है, हो ही जाता है।

और जगत् के लोग जिसे कहते हैं कि यह क्रोध करता है, मान करता है, अहंकार करता है, अब उसका फल यहीं का यहीं ही भुगतना पड़ता है। मान का फल यहीं का यहीं क्या आता है कि अपकीर्ति फैलती है, अपयश फैलता है। वह यहाँ ही भुगतना पड़ता है। यह मान करें, उस समय यदि मन

में ऐसा हो कि यह गलत हो रहा है, ऐसा नहीं होना चाहिए, हमें निर्मानी होने की ज़रूरत है। ऐसे भाव हों तो वह नया कर्म बाँधता है। उस कारण से अगले भव में फिर निर्मानी होता है।

कर्म की थियरी ऐसी है! गलत करते समय अंदर भाव परिवर्तित हो जाएँ तो नया कर्म वैसा बँधता है। और गलत करे और ऊपर से खुश हो कि 'ऐसा करने जैसा ही है' तो फिर नया कर्म मज़बूत हो जाता है, निकाचित हो जाता है। उसे फिर भुगतना ही पड़ता है।

पूरा साइन्स ही समझने जैसा है। वीतरागों का विज्ञान बहुत गुह्य है।

वास्तविकता का रहस्यज्ञान

जगत् की वस्तविकता का रहस्यज्ञान लोगों के लक्ष्य में ही नहीं है और जिससे भटकते रहना पड़े, उस अज्ञान-ज्ञान का सबको पता है। यह जेब कट गई, उसमें किसकी भूल? इसकी जेब नहीं कटी और तेरी ही क्यों कटी? आप दोनों में से इस समय कौन भुगत रहा है? 'भुगते उसकी भूल!' यह 'दादा' ने ज्ञान में 'जैसा है वैसा' देखा है कि, 'भुगते उसकी ही भूल है।'

यह पूरा जगत् 'अपनी' मालिकी का है। हम 'खुद' ब्रह्मांड के मालिक हैं। फिर भी हमें दुःख क्यों भुगतना पड़ा, वह ढूँढ़ निकाल न? यह तो हम अपनी भूल से बँधे हुए हैं। लोगों ने आकर बाँधा नहीं है। वह भूल मिटाए, फिर मुक्त। और वास्तव में तो मुक्त ही है, लेकिन भूल की वज़ह से बंधन भुगतता है।

भुगते उसकी भूल

जो दुःख भुगते उसकी भूल और सुख भुगते तो वह उसका इनाम। लेकिन भ्रांति का कायदा निमित्त को पकड़ता है। भगवान का कायदा-रियल कायदा, वह तो जिसकी भूल हो उसीको पकड़ता है। यह कायदा एक्ज़ेक्ट है और उसमें कोई फेरफार कर सके, ऐसा है ही नहीं। जगत् में ऐसा कोई कायदा नहीं है कि जो किसीको *भोगवटा* दे सके! सरकार का कायदा भी भोगवटा नहीं दे सकता।

खुद की कोई भूल होगी तो ही सामनेवाला कहता होगा न? इसलिए भूल को मिटा डालो न! इस जगत् में कोई जीव किसी जीव को तकलीफ़ दे नहीं सकता, ऐसा स्वतंत्र है और तकलीफ़ देता है वह पूर्व में दख़ल की थी इसलिए। वह भूल मिटा डालो फिर हिसाब नहीं रहता।

प्रश्नकर्ता : ये थियरी ठीक से समझ में आ जाए तो मन के सारे प्रश्नों का समाधान रहे।

दादाश्री : समाधान नहीं, एक्ज़ेक्ट ऐसा ही है। यह संजोया हुआ नहीं है, बुद्धिपूर्वक की बात नहीं है, यह ज्ञानपूर्वक का है।

कषाय के आधार पर दिखे दोषित

प्रश्नकर्ता : कोई पत्थर मारे और लगे तो उससे हमें चोट लगती है और ज़्यादा उद्वेग होता है।

दादाश्री : चोट लगती है इसलिए उद्वेग आता है, नहीं? और पहाड़ पर से पत्थर लुढ़कता-लुढ़कता सिर पर गिरे और खून निकला तो?

प्रश्नकर्ता : उस परिस्थिति में 'कर्म के अधीन से हमें लगना होगा इसलिए लग गया', ऐसा मानते हैं।

दादाश्री : पर पहाड़ को गाली नहीं देते? गुस्सा नहीं करते उस घड़ी?

प्रश्नकर्ता : उसमें गुस्सा आने का कारण नहीं है। क्योंकि सामने किसने किया, उसे हम पहचानते नहीं हैं।

दादाश्री : क्यों वहाँ सयानापन आता है?

सहज सयानापन आता है या नहीं आता? वैसे ही, ये सब पहाड़ ही हैं। ये हमेशा पत्थर डालते हैं, गालियाँ देते हैं, चोरियाँ करते हैं, वे सब पहाड़ ही हैं, चेतन नहीं हैं। ये समझ में आ जाए तो काम निकल जाए।

गुनहगार दिखता है, वह आपके अंदर क्रोध-मान-माया-लोभ, अंदर जो शत्रु हैं न, वे दिखाते हैं। खुद की दृष्टि से गुनहगार नहीं दिखता, क्रोध-मान-माया-लोभ दिखाते हैं। जिसे क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं है, उसे कोई गुनहगार दिखलानेवाला है ही नहीं और उसे कोई गुनहगार दिखता भी नहीं है। वास्तव में गुनहगार जैसा कोई है ही नहीं। यह तो क्रोध-मान-माया-लोभ घुस गए हैं और वे, 'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसा मानने से घुस गए हैं। 'मैं चंदूभाई हूँ' की मान्यता छूट गई, फिर क्रोध-मान-माया-लोभ चले जाएँगे। फिर भी घर खाली करने में उन्हें ज़रा देर लगती है। बहुत दिनों से घुसे हुए हैं न!

'झूठ' से भी कषाय रोकिए

बाकी, सच्चा-झूठा वह तो एक लाइन ऑफ डिमार्केशन है, नहीं कि वास्तव में वैसा ही है। 'सत्य की अगर पूँछ पकड़ोगे तो असत्य कहलाएगा', तब वे भगवान कैसे? कहनेवाले कैसे? 'क्या साहब, सत्य को भी असत्य कहते हैं?' हाँ, पूँछ क्यों पकड़ी? सामनेवाला कहे कि, 'नहीं, ऐसा नहीं है।' तो हमें छोड़ देना चाहिए।

जहाँ सत्य का कोई भी आग्रह है, वह असत्य हो गया! क्योंकि उस बेचारे को कोई मनुष्य परेशान करता हो और इन लोगों ने तो पूँछ पकड़ी हुई है। गधे की पूँछ पकड़ी सो पकड़ी! अरे, छोड़ दे न! लातें मारे तो छोड़ देना चाहिए। लात लगी तो हम समझ जाएँ कि यह गधे की पूँछ मैंने पकड़ी हुई है। सत्य की पूँछ पकड़नी नहीं है। सत्य की पूँछ पकड़ी, वह असत्य है। ऐसे पकड़े रखना, वह सत्य ही नहीं है। छोड़ देना, वह सत्य!

चाचा कहते हों, 'क्या टूटा?' तो हमें ज़रा झूठ बोलकर ऐसा समझाना आए कि, 'भाई, पड़ोसी के यहाँ कुछ टूटा लगता है।' तो चाचा कहेंगे, 'हाँ, तब कोई हर्ज नहीं।' मतलब वहाँ झूठ बोले तो भी हर्ज नहीं है। क्योंकि वहाँ सच बोले तो चाचा कषाय करेंगे, उससे वे बहुत नुकसान उठाएँगे न! इसलिए वहाँ 'सच' की पूँछ पकड़ के रखने जैसी नहीं है। और 'सच' की पूँछ पकड़ता है, उसे ही भगवान ने 'असत्य' कहा है।

यह झूठ बोलना हमने अकेले ने ही सिखलाया है, इस दुनिया में दूसरे किसीने सिखलाया नहीं है। लेकिन उसका यदि दुरुपयोग करे तो जिम्मेदारी उसकी खुद की। बाकी, हम तो इसमें से छटकने का मार्ग दिखलाते हैं, लेकिन उसका दुरुपयोग करे तो उसकी जोखिमदारी! यह तो छटकने का मार्ग दिखलाते हैं कि, 'भाई, यह चाचा को कषाय नहीं हों, उसके लिए ऐसा करना।' नहीं तो उस चाचा को कषाय हों, तब आपसे कषाय करेंगे। 'तू अक़्ल बगैर का है। बहू को कुछ कहता नहीं है। वह बच्चे संभालती नहीं है। ये प्याले सारे तोड़ डालती है।' मतलब ऐसा सब खड़ा होता है, और सुलगता है फिर! यानी कषाय हुए कि सब सुलगता है। उसके बजाय सुलगते ही टोकरी ढाँक देनी चाहिए।

कषाय की तुलना में असत्य उत्तम

कषाय कम करने के लिए घर जाएँ और सत्य बोलने से घर में कषाय बढ़ जाएँ ऐसा हो तो असत्य बोलकर भी कषाय बंद कर देना अच्छा। वहाँ फिर सत्य को छोड़ देना चाहिए? 'यह' सत्य वहाँ पर असत्य ही है! इसलिए हमने कहा कि आत्मा प्राप्त करने के लिए घर पर असत्य बोलकर आओगे तो वह सत्य है। पत्नी कहे, 'वहाँ नहीं जाना है, दादा के पास।' पर आत्मा प्राप्त करने का आपका हेतु है, तो असत्य बोलकर आओगे तो भी जिम्मेदारी मेरे सिर पर है।

कषायों का डेवलपमेन्ट कैसा?

हिन्दुस्तान के लोगों का ये फ़ॉरेनवाले तिरस्कार करते हैं। उन्हें 'अन्डरडेवलप्ड'(अविकसित) कहते हैं। तब मुझे कहना पड़ता है कि, मुआ, तू अन्डरडेवलप्ड है। आध्यात्मिक के लिए तू अन्डरडेवलप्ड है और भौतिक में तू फुल्ली डेवलप्ड (पूर्ण विकसित) है। भौतिक में तुम्हारा देश फुल्ली डेवलप्ड है। जब कि भारत देश भौतिक में अन्डरडेवलप्ड है और आध्यात्मिक में फुल्ली डेवलप्ड प्रजा है। यहाँ के जेबकतरे को भी मैं एक घंटे में भगवान बना सकूँ, ऐसा है। बाहर की सारी ही प्रजा आंतरविज्ञान में अन्डरडेवलप्ड है, वह किस तरह मैं आपको समझाऊँ?

वहाँ के लोगों के क्रोध-मान-माया-लोभ अभी डेवलप हो रहे हैं। जब कि हिन्दुस्तान के लोगों के क्रोध-मान-माया-लोभ फुल्ली डेवलप हो गए हैं। टोप पर जा पहुँचे हैं।

वहाँ फ़ॉरेन में आपका पहचानवाला हो, उसे आप कहो कि 'मुझे यहाँ से पचास मील दूर जाना है।' तो वह आपको उसकी मोटरगाड़ी में ले जाएगा और वापस लाएगा और फिर रास्ते में होटल का बिल भी वह देगा। जब कि यहाँ आपके चाचा के बेटे के पास मोटरगाड़ी माँगोगे तो वह हिसाब निकालेगा कि पचास मील जाने के और पचास मील आने के, सौ मील होंगे। पेट्रोल का खर्च इतना, ऑइल-पानी का खर्च इतना और ऊपर से मेरी मोटर इतनी घिसेगी, ऐसा भी अंदर हिसाब निकाल लेता है। इसलिए मुआ झूठ बोलता है कि 'कल तो मेरे साहब आनेवाले हैं।'

यानी क्या है? उसका (फ़ॉरेनवाले का) लोभ ही डेवलप नहीं हुआ है और इसका लोभ फुल्ली डेवलप हो गया है। सात पीढ़ी तक का डेवलप हो गया है। जब कि वहाँ की प्रजा का लोभ कितना डेवलप हुआ होता है? अपने तक का ही। विलियम और मेरी तक ही और लड़का अठारह साल का हो जाए फिर तू अलग और हम अलग। और यदि मेरी के साथ ज़रा सा टकराव हुआ तो तू अलग और मैं अलग, तुरन्त ही डिवोर्स। जब कि हमारे यहाँ ममता तो ठेठ तक की डेवलप हुई होती है। एक अस्सी साल की बूढ़ी और पचासी साल का बूढ़ा सारी ज़िन्दगी रोज़ झगड़ते हैं। रोज़ किच-किच चलती है। और जब बूढ़ा मर गया तब बुढ़िया ने श्राद्ध किया। और खटिया में 'तेरे चाचा को ये भाता था और तेरे चाचा को वह अच्छा लगता था', ऐसा याद करके रखा। मैंने कहा, 'क्यों चाची? आप तो रोज़ झगड़ते थे न?' तब चाची ने कहा, 'वह तो ऐसा ही होता है, लेकिन तुम्हारे चाचा जैसे मुझे फिर से नहीं मिलेंगे। मुझे तो भवोभव वही चाहिए।' ममता भी टोप तक पहुँची हुई होती है!

वहाँ कषाय विकसित नहीं हुए हैं

प्रश्नकर्ता : उन फ़ॉरेनवाले लोगों का जीवन ही ऐसा होता है कि कषाय उत्पन्न नहीं होते। रहन-सहन, हवा, वातावरण सारी व्यवस्था ऐसी होती है कि कषाय उत्पन्न नहीं होते है।

दादाश्री : वह उनके हिसाब अनुसार ही सब आयोजित हुआ होता है। कषाय ही नहीं न! लोभ कषाय नहीं। मान कषाय नहीं। कोई दूसरा झँझट ही नहीं। पार्लियामेंट में होते हैं, उतनों को थोड़े-बहुत विचार आते हैं। बाकी विचार ही नहीं आते न!

प्रश्नकर्ता : वहाँ पाँच सौ रुपये का खराब माल निकला तो वापस लौटाएँ तो तुरन्त ले लेते हैं।

दादाश्री : हाँ, तुरन्त ले लेते हैं।

प्रश्नकर्ता : और यहाँ तो बेचा हुआ माल वापस लेने में नहीं आता।

दादाश्री : अरे, लिखा हुआ हो तब भी नहीं लें!

नहीं तो मोक्ष सूझता नहीं

फ़ॉरेन के लोगों के क्रोध-मान-माया-लोभ इतने-इतने ही हैं! एक इंच के! और अपने लोगों के क्रोध-मान-माया-लोभ तो पेड़ जितने हो गए हैं! इसलिए चिंताएँ भी बहुत हैं और उन्हें चिंता-विंता नहीं होती और अपने लोगों को चिंताएँ भी बहुत, इसलिए फिर मन में ऊब जाते है कि इसमें सुख नहीं है। इसलिए फिर खोजता है कि सुख किसमें है? तब सुख मोक्ष में है, कहेंगे! फिर मुक्ति के विचार आते हैं। यहाँ यदि चिंता नहीं हो तो कोई मोक्ष में जाए नहीं, एक भी मनुष्य नहीं जाए।

मिलता है व्यवस्थित के हिसाब अनुसार

और देह धारण हुई है, वह देह तो अपना लेकर आई होगी न? हिसाब तो लेकर आई होगी न? दाढ़ी बढ़ाने की इच्छा नहीं है फिर भी बढ़ती रहती है, तो रोटियाँ नहीं मिलेगी? एक घड़ी में यदि कभी यह प्रकृति रूठ जाए न तो इस खुली आँखों से रोशनी बंद हो जाए, बिलकुल वैसा यह जगत् है। तो लाइट चालू रहती है, तो क्यों रोटियाँ नहीं मिलेगी? इसलिए किसीकी भी फिक्र-चिंता नहीं, व्यवस्थित ऐसा है न, सबकुछ लेकर आया हुआ है आपका। इसलिए फिक्र-चिंता जैसा है नहीं।

फिर भी व्यवस्थित पर बैठना नहीं किसी दिन भी। व्यवस्थित को अपने पर बिठाना। उसके ऊपर मत बैठना। उसके ऊपर बैठोगे तब तो बेहाल हो जाएगा। व्यवस्थित को याद करना नहीं होता। जब खाना नहीं मिले उस दिन वीतराग भगवान की कही हुई आज्ञा के आराधनपूर्वक का उपवास। यह तो मिलता है, उस दिन कहेगा, 'आज मेरा उपवास है।' दूसरे दिन ठिकाना नहीं हो, तब फिर अमुक-अमुक रखा हो, तब कषाय किया करता है, 'यह कहाँ से उठा लाए ऐसा? ये ठंडी रोटियाँ और ये सब?' तब मूआ, कषाय करना हो तो उपवास मत करना, और उपवास करना हो तो कषाय मत करना। कषाय के लिए उपवास नहीं करने हैं। कषाय निकालने के लिए उपवास करने हैं।

पूरण हुआ, गलन होता है

व्यवस्थित एक्ज़ेक्ट व्यवस्थित ही है, कभी भी? वह भोक्तापद में हो तो!

प्रश्नकर्ता : उसका प्रतिपूर्ण वर्तन कैसा होना चाहिए?

दादाश्री : यानी वर्तन तो जो अंदर व्यवस्थित में हो ऐसा होना चाहिए, किन्तु राग-द्वेष बगैर का होता है। क्योंकि राग-द्वोष तो कब होते हैं? अंदर यह दख़लवाला मिला हो, तब। कर्त्ता आ मिला कि राग-द्वेष होते हैं। अब कर्त्तापद उड़ गया है और खुद ज्ञाता हुआ है। इसलिए राग-द्वेष नहीं होते। गुस्सा होता है लेकिन उसके पीछे क्रोध-द्वेष नहीं होता। थोड़ी देर के बाद कुछ भी नहीं, अंदर भरा हुआ माल। पूरण हुआ माल गलन होता है। नया पूरण होना बंद है।

अब ज्ञान के बाद क्रोध-मान-माया-लोभ होते नहीं हैं, लेकिन लोगों को मन में ऐसा होता है कि अभी भी मुझे होते हैं, वे डिस्चार्ज है। चार्ज रूप में नहीं होते हैं। चार्ज रूप में क्रोध-मान-माया-लोभ किसे कहा जाता है? जिसके पीछे हिंसक भाव हो और तांता हो।

हम यहाँ सभी महात्माओं में अहंकार देखते हैं, परन्तु वह ड्रामेटिक होता है, क्योंकि 'फाइलें' रही हैं, उनका *निकाल* करना पड़ता है। इसलिए चंदूलाल का ड्रामा रहा। फायदा हुआ तो छूता नहीं और नुकसान हुआ तो भी छूता नहीं। सिर्फ चंदूलाल का नाटक समभाव से करके छूट जाना है।

वहाँ उपाय प्रतिक्रमण

अब वह जो कमज़ोरी, क्रोध-मान-माया-

लोभ, राग-द्वेष क्या-क्या काम करते हैं? कौन-सा खेल खेलते हैं?

प्रश्नकर्ता : हड़बड़ी करा डालते हैं। गुस्सा आ जाता है। फिर जागृति आती है कि हमने यह गलत किया है, फिर उसका प्रतिक्रमण करना ज़रूरी है?

दादाश्री : हमारे गुस्से से सामनेवाले को दु:ख हुआ हो या सामनेवाले को कोई भी नुकसान हुआ हो, तब हमें चंदूभाई (फाइल नं-१) से कहना चाहिए कि, 'हे चंदूभाई ! प्रतिक्रमण कर लो, माफ़ी माँग लो।'

बच्चों को मारने का कोई अधिकार नहीं है, समझाने का अधिकार है। फिर भी, बच्चे को पीट दिया और फिर प्रतिक्रमण नहीं करे तो सब चिपकते ही रहेंगे न? प्रतिक्रमण तो होना ही चाहिए न? बच्चे को पीट डाला वह तो प्रकृति के उल्टे स्वभाव की वज़ह से, क्रोध-मान-माया-लोभ की वज़ह से, कषायों की वज़ह से पीट डाला। कषाय उत्पन्न हुए इसलिए पीट डाला। लेकिन पीट डालने के बाद मेरा शब्द याद रहे कि, 'दादा' ने कहा था कि अतिक्रमण हुआ तो ऐसा प्रतिक्रमण करो, तो प्रतिक्रमण करे न तो भी वह धुल जाता है! तुरन्त ही धुल जाए, ऐसा है। धर्मध्यान से, बँधा हुआ कर्म छूटता है और नया बँधता नहीं! और संपूर्ण मोक्ष तो शुक्लध्यान उत्पन्न होगा, तब होगा। शुक्लध्यान तो 'ज्ञानी पुरुष' के पास से ही होता है। शुक्लध्यान इस काल में तो वीतरागों ने मना किया है। लेकिन यह तो अक्रम मार्ग है, अपवाद मार्ग है इसलिए 'हम' शुक्लध्यान घंटे में ही देते हैं। नहीं तो शुक्लध्यान की बात ही नहीं होती न! और शुक्लध्यान हुआ यानी काम ही बन गया न!

किसीको हमसे दु:ख न हो

प्रश्नकर्ता : हमारे अभिमान से किसीको तकलीफ़ नहीं हो और संताप नहीं हो, उसके बजाय सामनेवाले को सुख हो, उसके लिए हमें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : इतना भाव ही करना है। दूसरा कुछ करना नहीं है। 'हमारे अभिमान से किसीको दु:ख न हो और सुख हो।' ऐसा भाव करना है। फिर दु:ख हो जाए तो प्रतिक्रमण करने हैं और आगे चलने लगना है। तब क्या करें फिर? कुछ पूरी रात हमें वहाँ बैठे रहना है? बैठे रहा जाए ऐसा नहीं है यह फिर। हमें बैठे रहना हो तो भी बैठा जाए ऐसा नहीं है, तब क्या करना चाहिए? फिर भी, इन लोगों को दु:ख नहीं हो उस तरह हमें कदम उठाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : उस हिसाब से तो पूरा संसार अहंकार का परिणाम ही है। 'मैं चंदूभाई हूँ' उसका परिणाम ही पूरा संसार न?

दादाश्री : लेकिन अब वह अहंकार, इस 'ज्ञान' के बाद आपका गया। फिर से अहंकार रहता हो तो परिणाम खड़े हुआ करे न! इस 'ज्ञान' के बाद तो नये परिणाम खड़े होते नहीं न! और पुराने परिणाम खतम ही होते रहते हैं। सिर्फ पुराने ही चले जाएँगे। इसलिए हल निकल आया। वह टंकी नयी भरती नहीं है। किसीकी टंकी पचास गेलन की होती है और किसीकी पच्चीस लाख गेलन की होती है। बड़ी टंकी हो तब देर लगती है। लेकिन खाली होने लगा, उसे क्या?

प्रश्नकर्ता : लेकिन टंकी खाली होते होते तो उस फ्लड (बाढ़) की तरह किसीको लुढ़का दे। किसीसे टकराए और किसीको मार दे न, फिर।

दादाश्री : हाँ। वह तो सारा जो मारता है न, वे तो उसके परिणाम हैं न! उसमें हमें क्या लेना-देना? लेकिन किसीको दु:ख हो तो उसका प्रतिक्रमण कर लेना।

समकित दृष्टि से ही भेदन आवरणों का

प्रश्नकर्ता : ज्ञायक स्वभावी के संसारी उदय आएँ, तब वह उसमें उदयवश नहीं होता?

दादाश्री : नहीं, उदय का वह ज्ञाता होता है। उदय का ज्ञाता हो तब ज्ञायक स्वभाव कहलाता है, और उदय का ज्ञाता नहीं हो तब उदयवश कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, एक बार ज्ञायक स्वभाव में आया हो उसके बाद फिर उदयवश हो जाता है क्या?

दादाश्री : वह तो उदयवश हो जाता है न, भारी उदय आएँ तब, उदय बहुत चिकने हों, तब। इसलिए यह प्रत्याख्यानावरण कषाय ऐसा लिखा है। इसलिए मैं बहुत विचार करता था कि अहो! यह प्रत्याख्यानावरण वह कषाय फिर किस तरह के? ज्ञान होने से पहले मैं बहुत विचार करता था। क्योंकि उन लोगों ने क्या कहा, अविरत कषाय यानी अनंतानुबंधी फिर अप्रत्याख्यानी, ये प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान किया नहीं, ऐसे कषायों को क्या कहते हैं? 'अप्रत्याख्यानी।'

प्रश्नकर्ता : अब अनंतानुबंधी में से अप्रत्याख्यानी में आता है, फिर प्रत्याख्यानी में आता है। तो वह जो प्रक्रिया में आने की जो दशा है, उसके पीछे *समकित* की दृष्टि है?

दादाश्री : समकित ही। समकित दृष्टि को लेकर ही आगे बढ़ता रहता है।

अनंतानुबंधी कषाय

प्रश्नकर्ता : यह अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानी, उन कषायों को विस्तार से समझाइए।

दादाश्री : शास्त्रकारों ने क्या लिखा है? कि भाई, एक व्यक्ति ने इस बहन के साथ दो ही वाक्य ऐसे बोले कि जिससे उस बहन का मन टूट गया। वह भाई, मन टूट गया ऐसा बोला, कि सारी ज़िन्दगीभर अब जुड़ेगा नहीं। ऐसे मन हमेशा के लिए टूट जाता है। उसे शास्त्रकारों ने क्या कहा? अनंतानुबंधी क्रोध, जो अनंत अवतार तक भटका दे वैसा यह क्रोध।

दूसरे प्रकार का क्रोध हुआ तो सालभर तक बोले नहीं वह। सालभर हो जाए तब घाव भरता है, क्रोध भूल जाते है और घाव भर जाता है। यानी सालभर की मुद्दत का, वह किस प्रकार का क्रोध? अप्रत्याख्यानी क्रोध, यानी जिसके पश्चाताप लिए नहीं थे, प्रतिक्रमण किए नहीं थे, इसलिए यह निकला, ऐसा कहते है।

प्रश्नकर्ता : एक बार जो गुस्सा हुआ था वही गुस्सा वापस निकला कहलाए?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं। गुस्सा होने के बाद प्रतिक्रमण नहीं करे, तो वापस वैसे के वैसे फोर्स से निकलता है। गुस्सा करने के बाद प्रतिक्रमण नहीं करे तो सालभर का, और फिर प्रतिक्रमण करे तो पंद्रह दिनों का। पंद्रह दिनों में दोनों वापस बोलने लगते हैं, भूल जाते हैं सब। वह कैसा कहते हैं? प्रत्याख्यानी क्रोध।

सारी ज़िन्दगी का टूट जाए, वह अनंतानुबंधी क्रोध। पत्थर की कगार के बीच में दरार हुई होती है, फुट की या दो फुट की, वह चाहे जितनी अंदर वस्तुएँ गिरे, तो भी मूल वह दरार जो है वह हमेशा रहती है।

उसके आगे सालभर का कौन-सा कहा? अप्रत्याख्यानी। उसमें खेत की ज़मीन में मिट्टी में दरार पड़ी होती है, इसलिए सालभर में जुड़ जाती है।

फिर उसके आगे का क्रोध - पंद्रह दिनोंवाला क्या है? वह प्रत्याख्यानी, उसमें रेत पर एक लकीर खींची, आज सागर की रेत पर लकीर खींची तो क्या हो जाएगा? कितनी देर में मिट जाएगी?

प्रश्नकर्ता : तुरन्त, पवन आए कि तुरन्त!

दादाश्री : पवन आए उससे एक हो जाते है। एक घंटा-दो घंटे भी लगते है, वह प्रत्याख्यानी क्रोध। और चौथा, पानी में लकीर खींचे और फिर

जुड़ जाए। तो यह पानी की लकीर कहलाता है, वह संज्वलन क्रोध। महात्माओं को सभी को पानी की लकीर जैसा नहीं होता। सभी को पंद्रह दिनों के बाद जुड़ता है। कुछ को पानी जैसा भी होता है।

बुद्धि क़बूल करे ऐसी बात कही है न, इन शास्त्रकारों ने!

प्रश्नकर्ता : आत्मा क़बूल करे ऐसी बात है।

दादाश्री : वह आत्मा यानी कौन-सा? व्यवहार आत्मा, प्रतिष्ठित आत्मा। वह बुद्धि का खेल है। और आत्मा कौन-सा होता है? ये सब व्यवहार आत्मा। मूल आत्मा तो उसे भी जानता है, सब जानता है!

अप्रत्याख्यानावरण कषाय

प्रश्नकर्ता : एक बार अनंतानुबंधी टूटे, तो फिर वह निम्न कक्षा में जाता है, इसलिए वह फिर धीरे-धीरे घटता रहता है?

दादाश्री : वह तो बढ़ भी जाता है। लेकिन अप्रत्याख्यान आते हैं, मतलब कषाय जो होते हैं, उस पर कभी भी प्रतिक्रमण या प्रत्याख्यान किया नहीं है। इसलिए सब जो कषाय आते हैं, वे प्रत्याख्यान नहीं किए हैं इसलिए आते हैं। यानी प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान की शुरूआत होती है। वहाँ फिर प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान करता रहता है, पाँचवे गुंठाणे में, उसका फल आता है तब छठे गुंठाणे में जाता है। छठे में क्या होता है? प्रत्याख्यानावरण कषाय!

प्रत्याख्यानावरण कषाय

प्रत्याख्यानावरण यानी क्या? प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान किया हो, तो भी कषाय आते हैं। वह तो कितने ही परतवाले हैं, वे आते हैं। थोड़े परतवाले चले गए, लेकिन ज़्यादा परतवाले प्रत्याख्यान आवरण। लाख प्रतिक्रमण करे तो भी नहीं जाते।

प्रश्नकर्ता : वह कौन-से दोष?

दादाश्री : उन्हें प्रत्याख्यानावरण कहा है। प्रत्याख्यान किए हैं, तो भी वे जाते नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो किस कारण से इतना अधिक?

दादाश्री : बहुत गहरे, मोटे! पाँच हज़ार परत हो न प्याज़ के, तो हम परत उतारते रहे तो भी वह दिखता रहता है न। एक तरह का आवरण है। सबमें एक-दो होते हैं, ज़्यादा नहीं होते।

प्रश्नकर्ता : वे बार बार आते रहते हैं?

दादाश्री : हाँ, बार बार वे आते रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन कभी तो जाएँगे न?

दादाश्री : जाने लगते हैं। हिसाब होने लगे फिर कम ही होता है, उनके जाने में हर्ज नहीं है, जानेवाले तो हैं ही लेकिन आज कौन-सी बाधा आई? प्रतिक्रमण करता हूँ, प्रत्याख्यान करता हूँ, फिर भी वापस आते हैं?

यानी अप्रत्याख्यान आवरण किए प्रत्याख्यान करके। लेकिन अब वह प्रत्याख्यान का आवरण हुआ उसका क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : उसका भी आवरण होगा?

दादाश्री : हाँ, साबुन से तो तू अभी मैल निकालता है, लेकिन साबुन का मैल आए उसका क्या? यानी प्रत्याख्यानावरण। इसलिए फिर ऐसा करते-करते बढ़ते-बढ़ते चोखा होता है न, वह प्रत्याख्यानावरण! प्रत्याख्यान किए हों तो भी दोष होते हैं वे प्रत्याख्यानावरण कषाय कहलाते हैं। क्योंकि जाथु प्रतिक्रमण किया था न, इस वज़ह से।

संज्वलन कषाय

निरंतर प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान हो, उसे प्रत्याख्यानावरण कहते है, वह छठा गुंठाणा। पहले के अप्रत्याख्यान का अभी प्रत्याख्यान करता है। छठा निश्चय का और व्यवहार का गुंठाणा बापजी का कब कहलाता है? हर एक क्षण प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान

हों। पहले के प्रत्याख्यान का अभी उदय आया हो उसका त्याग बरतता है।

यानी छठा गुंठाणा किसे कहा जाता है? कषाय कार्यकारी होते है। रूपक में दिखें ऐसे कार्यकारी होते हैं। रूपक तो बात अलग है, लेकिन कार्यकारी कषाय दिखते है। अब प्रतिक्रमण होने के बावजूद भी कार्यकारी होते हैं, यानी पच्चखाणी प्रतिक्रमण किए है, फिर भी अभी बाकी रहा है यह। ये गाँठ बड़ी होने के कारण वह प्रत्याख्यानी कहलाता है। प्रत्याख्यान आवरण है! और भीतर उदय हो लेकिन कार्यकारी नहीं हो तो वह संज्वलन कहलाता है। धौल-वौल नहीं देता। प्रत्याख्यानावरण में भी भीतर दु:ख होता है, वेदना होती है। लेकिन समाधि रहती है, वह तो जब अनुभव होता है न तब पता चलता है कि 'यह क्या है।' यानी यह बात अलग तरह की है!

क्रोध-मान-माया-लोभ प्रत्याख्यानी होते हैं। यानी कैसे? कि दूसरे को पता नहीं चलता। दूसरा कोई बुद्धिवाला भी बुद्धि से नाप नहीं सकता कि यह क्रोध से भरे हुए हैं। सिर्फ वह खुद अकेले ही जानते हैं। वे प्रत्याख्यानी होते हैं! इसलिए पंच महाव्रतधारी की तो बात ही कहाँ हो? ऐसा जो कोई हो तो बहुत हो गया न इस काल में। प्रत्याख्यानी गएँ, इसलिए फिर संज्वलन कषाय रहे।

गुणस्थानकों की समझ

प्रश्नकर्ता : गुणस्थानकों को समझाइए।

दादाश्री : पहले तीन गुंठाणे मोक्ष के लिए काम नहीं लगते, वहाँ चलेगा नहीं। वह तो मंदिर में आना-जाना करे, उतना ही। भटकते रहते हैं। भीतर समकित हो, उघाड़ हो, तब चौथे गुंठाणे से काम में आता है। समकित का उघाड़ हो, बाद में। इसलिए ये सब, पहले तीन गुंठाणों में भटकते रहते हैं। चौथे में उजाला होता है। वह समक्ति हुआ तब से आगे बढ़ता है। फिर चौथे में से पाँचवे में आता है। ज़्यादा प्रतिक्रमण करते-करते छठे में आता है। बस, ऐसे ही प्रतिक्रमण करते करते आगे बढ़ता है।

छठा से नवें गुणस्थानक की दशाएँ

व्यवहार गुंठाणा सबका बदलता रहता है। कोई चौथे में आता है, कोई पाँचवे में आता है, कोई छठे में आता है। पहले अप्रत्याख्यान थे, अप्रतिक्रमण थे। वह अब आलोचना हुई, प्रतिक्रमण हुए, प्रत्याख्यान हुए! इसलिए वे अप्रत्याख्यान आवरण भी गए।

जिन्हें अभी व्यवहार में मोटी 'फाइलें' हैं वे अभी छठ्ठे गुंठाणे में आए कहलाएँ।

व्यवहार में छठा गुंठाणा किसे कहा जाता है? स्त्री-पुरुष, वह सब छोड़ा उसे नहीं, लेकिन अप्रत्याख्यान आवरण नहीं होना चाहिए। प्रत्याख्यान करें तो भी वही का वही दिखाई दे, यानी फिर प्याज़ की परत दिखाई दे। वह प्रत्याख्यान आवरण। कभी घंटाभर बैठ जाए तब अप्रमत आता है, सातवाँ गुंठाणा! फिर कभी आठवाँ अपूर्व आता है! वहाँ ऐसा आनंद-आनंद हो जाता है न! लेकिन नवाँ पार नहीं किया जा सकता। क्योंकि स्त्री परिग्रह है तब तक नवाँ गुंठाणा पार नहीं किया जा सकता।

कषायभाव के कारण अजागृति

प्रश्नकर्ता : दूसरों की तरफ अतिक्रमण नहीं हो, और कोई न कोई कषाय नहीं हो तो, उसके बगैर सौ प्रतिशत ज्ञाता-दृष्टा किस तरह रह सकते है?

दादाश्री : ऐसा नहीं, किसीकी तरफ भले ही अतिक्रमण विचार में भी नहीं हो, लेकिन मन तो किसी न किसी कषाय में होता ही है, राग में नहीं होता तो द्वेष में होता है। ज्ञाता-दृष्टा में नहीं रहा जाता तब तक कषाय ही होते है।

प्रश्नकर्ता : ये कोई भी विचार चलता हो तो उसमें कोई न कोई कषाय होता ही है?

दादाश्री : होता ही है, होता ही है। लेकिन

जो विचार हम देख सकते हैं, उन विचारो में कषाय नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : वह गुत्थी पूरी आकर जाए बाद में ही पता चलता है?

दादाश्री : नहीं, उसे देख सकें, बाद में पता चलता है। फिर भी तब तक कषाय कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : पंद्रह-बीस मिनट चले फिर दिखता है।

दादाश्री : कषाय अपनी जागृति बंद कर देते हैं। यानी ज्ञाता-दृष्टापना नहीं रहने देते। और यदि हमें खराब से खराब विचार आते हो और उन्हें देखते रहें तो कषाय का कोई भाग छूता नहीं है।

कषाय परवशता से, प्रतिक्रमण स्ववशता से

यह अक्रम विज्ञान इतना स्वीकार करता है कि क्रोध-मान-माया-लोभ बंद हों तो ही संयम है। वर्ना वे होते हों तो प्रतिक्रमण करना। क्योंकि वह अतिक्रमण है। विषय, वे अतिक्रमण होते नहीं हैं और ये कषाय अतिक्रमण कहलाते है। उस अतिक्रमण का प्रतिक्रमण सिखलाया है। अतिक्रमण से जगत् खड़ा हुआ है और प्रतिक्रमण से बंद हो जाएगा। कषायों के व्यवहार से जगत् खड़ा हुआ है, विषयों के व्यवहार से नहीं हुआ है। कषायों के व्यवहार से हुआ है जगत्, वह अतिक्रमण कहलाता है और प्रतिक्रमण करो तो धुल जाता है। कषाय होना वह परवशता से होता है और उसका प्रतिक्रमण करना वह स्ववशता से होता है। इसलिए पुरुषार्थ प्रतिक्रमण से है।

आप में से अहंकार और मान, वे जाते हैं या नहीं, कम होते हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : कम होते हैं।

दादाश्री : हं। तो वह सारा जो माल है वह जाने लगा है, बारह महीने हों तो जाने लगते हैं। यह माल है, वह कम हो गया इसलिए आत्मा हो गए।

प्रश्नकर्ता : ये क्रोध-मान-माया-लोभ वे डिस्चार्ज है, इसलिए आएँगे तो सही, लेकिन अब उन्हें देखने के बाद खुद अलग किस तरह रहे?

दादाश्री : जागृति कम, डिम हो जाए तो उन्हें क्या करना पड़ता है? मेरी आज्ञा में ही रहने का प्रयत्न करते रहना चाहिए। फिर बेगार टालते रहें और आज्ञा में नहीं रहें, तो फिर वही का वही!

वे तो सारे कषाय भरे हुए हैं वे निकलते ही रहते हैं और आप उसे देखते रहकर फिर चंदूभाई (फाइल नं-१) से कहिए, 'प्रतिक्रमण करो।' प्रतिक्रमण से सारे ही कर्म मिट जाते हैं। कर्त्ता की ग़ैरहाज़िरी है, इसलिए संपूर्ण मिट जाते हैं। कर्त्ता की ग़ैरहाज़िरी में यह फल हम भुगतते है। कर्त्ता की ग़ैरहाज़िरी में भोक्ता है। इसलिए यह मिट जाता है और इस जगत् में लोग कर्त्ता की हाज़िरी में भोक्ता हैं। यानी प्रतिक्रमण करे फिर भी उसे थोड़ा-सा ढीला होता है, पर गायब नहीं हो जाता। फल दिए बगैर रहता नहीं और आपका तो वह कर्म ही गायब हो जाता है।

यदि उपयोग में रहे, फिर कुछ रहता ही नहीं। फिर कचरा बुहारना ही नहीं रहता। उसका नाम ही साफ किया कहलाता है। साफ हो गया हो तो उपयोग में रह सकते हैं और नहीं हो तो ज़रा-सा उपयोग हिचकता है। थोड़ी देर रहता है, थोड़ी देर नहीं रहता।

अज्ञान से बाँधे हुए हिसाब देखकर निकालो

प्रश्नकर्ता : किसी वक्त ऐसा होता है कि दोष होते वक्त दिखाई देता है, फिर भी यह करता रहता है।

दादाश्री : नहीं, वह रुकता नहीं, रोकना तो गुनाह कहलाता है। क्योंकि चल रही फिल्म को देखते रहना है। फिर मारामारी करता हो या अहिंसा करता हो या हिंसा करता हो। देखनेवाले को बाधा नहीं है। वह मारामारी करते वक्त रो पड़े कि 'ऐसे

मत मारना, मत मारना' उसमें हर्ज है। अरे! यह तो भरी हुई ही फिल्म है। इसलिए देखनेवाले को कोई हर्ज नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उस तरह होता हो न, तब पता चले न हमें? अंदर डाँटते भी हैं, कि यह आप जो करते हो वह सच्चा नहीं है, फिर भी एक ओर से वे मानते नहीं, और करते ही हैं।

दादाश्री : उसका हर्ज नहीं है। क्योंकि 'देखनेवाला' शुद्ध है। देखता है वह अच्छा और बूरा है, लेकिन वह सापेक्ष दृष्टि से है। हमारे लिए, देखनेवाले के लिए अच्छा-बूरा होता नहीं है। देखनेवाले को तो सब समान ही है। यह तो लोगों के मन में यह अच्छा-बुरा है, बाकी भगवान के घर अच्छा-बुरा है नहीं। समाज को अच्छा-बुरा है। भगवान तो क्या कहते हैं, देख लिया, यानी अलग हो गया! वह अलग और यह अलग!

यानी क्या हुआ कि, अज्ञान की वज़ह से, नासमझी की वज़ह से बाँधे हुए हिसाब को 'देखकर' निकालो। इसलिए आप अलग और वह अलग। 'देखे' बगैर बाँधे हुए हिसाब 'देखकर' निकालो वह अलग!

यह टंकी खतम होते, होते, होते अंत में जब खतम होने आएगी न, तब आपको शरीर हलका फूल जैसा लगेगा। यहाँ ही छूट गए ऐसा लगेगा।

परिणाम स्वरूप में भी कषाय

इस देह में ज़रा-सी भी क्रोध जैसी वस्तु नहीं होनी चाहिए। यानी क्रोध का परमाणु नहीं होना चाहिए, लोभ का परमाणु नहीं होना चाहिए, मान का परमाणु, कपट का कोई परमाणु रहे नहीं, उसके बाद वह भगवान कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : कषाय की कम्प्लीट (संपूर्ण) शून्यता होनी चाहिए?

दादाश्री : वे तो समझों गए, कषाय तो गए, उसके बाद उसका परमाणु भी नहीं रहना चाहिए, यानी परिणाम स्वरूप में भी नहीं रहना चाहिए। कषाय का जाना यानी क्या कि कॉज़ेज़ (कारण) स्वरूप में जाना उसका नाम कषाय का जाना कहलाता है। लेकिन उसका परिणाम भी चला जाता है, शरीर में परिणाम नहीं रहता। अभी 'कॉज़ेज़' तो आपके चले गए थे, लेकिन परिणाम स्वरूप में रहते है, किसी जगह पर चिपके हुए।

प्रश्नकर्ता : डिस्चार्ज, वह भी पूरा हो गया होता है?

दादाश्री : हाँ, वह दशा मैंने देखी थी। तभी तो यह मूल स्वरूप उत्पन्न होता है, अनुभव होता है, वर्ना नहीं होता। आत्मा दिखता नहीं। कषाय का अभाव वहीं पर आत्मा रहा हुआ है।

प्रश्नकर्ता : और वह संपूर्ण अभाव?

दादाश्री : वह हो नहीं सकता, इम्पोसिबल (असंभव) वस्तु है इस काल में, और सुषमकाल में इम्पोसिबल जैसी वस्तु नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यानी कषाय के उद्‌भवस्थान में भी नहीं होती, जहाँ उसका उद्‌भव होता है वहाँ भी नहीं होती?

दादाश्री : वहाँ भी नहीं होती।

अहंकार पिघलने से सनातन सुख

जितना उल्टा चला उतना 'इगोइज़म' बढ़ता है और जितना 'इगोइज़म' पिघलता है उतना सुख बरतता है। हमारा 'इगोइज़म' खतम हो गया होता है, इसलिए निरंतर सनातन सुख रहता है। दुःख में भी सुख रहे वह सच्चा सुख। कोई अपमान करे तभी भीतर खुद को सुख लगे तब ऐसा होता है कि, 'अहो! यह कैसा सुख!'

आत्मा में परम सुख ही है, लेकिन कलुषित

भाव की वज़ह से वह सुख अवरुद्ध होता है। यह सुख कहाँ से आता है? विषयों में से? मान में से? क्रोध में से? लोभ में से? इन किसीमें से नहीं आए तो समझना कि यह समकित है।

जहाँ कोई भी दुःख होता नहीं है वहाँ आत्मा है।

वैसे-वैसे आत्मवीर्य प्रकटता है

भीतर अनंत शक्ति है। अनंत सिद्धि है, लेकिन अव्यक्त रूप में रही हुई है। भीतर सुंदर, रमणीय शक्तियाँ है! गज़ब की शक्तियाँ है उन्हें छोड़कर बाहर से कदरूपी शक्तियाँ खरीदकर लाए। स्वभावकृत शक्तियाँ कितनी सुंदर है! और यह विकृत शक्तियाँ बाहर से खरीदकर लाए! भीतर दृष्टि ही नहीं पड़ी है। आत्मा प्राप्त होता है तब वह शक्तियाँ व्यक्त होने लगती है।

आत्मशक्तियों को आत्मवीर्य कहा जाता है। आत्मवीर्य कम हो तो उसमें कमज़ोरी उत्पन्न होती है, क्रोध-मान-माया-लोभ उत्पन्न होते है। अहंकार की वज़ह से आत्मवीर्य टूट जाता है। जैसे-जैसे अहंकार पिघलता है वैसे वैसे आत्मवीर्य उत्पन्न होता जाता है। जब-जब आत्मवीर्य कम होता लगे तब पाँच-पच्चीस बार ज़ोर से बोलना चाहिए कि, 'मैं अनंत शक्तिवाला हूँ', इसलिए शक्ति उत्पन्न होती है। मोक्ष जाने में अनंत अंतराय हैं। इसलिए मोक्ष में जाने के लिए सामने अनंत शक्ति है।

यह उल्टी शक्ति से संसार खड़ा हो गया है। अब सुल्टी शक्ति इतनी सारी है कि जो सारे ही विघ्नों को तोड़ डाले। इसलिए तो हम वह वाक्य बुलवाते है। 'मोक्ष जाने में विघ्नों अनेक प्रकार के होने से उनके सामने मैं अनंत शक्तिवाला हूँ।' ज्ञाता-दृष्टा रहने से तमाम विघ्नों का नाश हो जाता है। बाकी मोक्ष तो यह रहा, आपके पास ही पड़ा है। मोक्ष कहीं दूर है? अंतराय पड़े हैं बीच में।

जय सच्चिदानंद

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर

भारत ✦ '**संस्कार**' पर हर रोज़ रात ८-३० से ९ (हिन्दी में)
✦ '**सह्याद्रि**' **दूरदर्शन मराठी** पर सुबह ७-३० से ८ (सोम, मंगल, गुरु, शनि) तथा सुबह ७-१५ से ७-३० (बुध, शुक्र) - (मराठी में)
✦ गुजरात में '**दूरदर्शन**' पर हर रोज़ दोपहर ३-३० से ४ (अन्य राज्यों में डीडी-गुजराती पर उसी समय)
✦ '**दूरदर्शन - डीडी-गिरनार**' पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)

USA ✦ '**TV Asia**' पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)

USA-UK ✦ '**Aastha International**' पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (गुजराती में)

Africa ✦ '**Aastha International**' पर हर रोज़ सुबह १०-३० से ११ (गुजराती में)

✦ **समग्र विश्व में** (भारत के अलावा) **सोनी टीवी** पर (सोम से शुक्र) सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर

भारत ✦ '**झी जागरण**' पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (हिन्दी में)
✦ '**दूरदर्शन**' **डीडी-गिरनार** पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)

U.S.A. ✦ '**SAHARA ONE**' पर सोम से शुक्र, सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)

UK-Europe ✦ '**MA TV**' **Everyday 5 to 5-30 PM** (गुजराती में)

USA-UK ✦ '**Aastha International**' पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)

Africa ✦ '**Aastha International**' पर हर रोज़ रात १२ से १२-३० (गुजराती में)

अडालज त्रिमंदिर में आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में हिन्दी सत्संग शिविर - दि. ३ से ६ जून २०१०

दि. **३ जून** से **६ जून** २०१०, **समय :** हर रोज़ सुबह ९-३० से १२, शाम ४-३० से ७ - **सत्संग**
दि. **५ जून** २०१०, **समय :** दोपहर ४-३० से ७-३० - **ज्ञानविधि**

सूचना : यह शिविर केवल ऐसे हिन्दी भाषी मुमुक्षु-महात्माओं के लिए ही है, जो गुजराती भाषा नहीं जानते है। **इस शिविर के लिए रजिस्ट्रेशन २० मई २०१० तक निम्नलिखित सत्संग केन्द्रों पर होगा।** कृपया अपने नजदीकी सत्संग केन्द्र पर अपना रजिस्ट्रेशन अवश्य करवाएँ। यदि आपके नजदीक में कोई सत्संग केन्द्र नहीं है, तो अडालज मुख्य सत्संग केन्द्र के रजिस्ट्रेशन विभाग में अपना रजिस्ट्रेशन करवाएँ। रजिस्ट्रेशन कराने के बाद यदि आप किसी कारणवश नहीं आ सकेंगे तो अपना रजिस्ट्रेशन केन्सल करवाना न भूलें। सेन्टर संचालको से सूचना है कि २१ मई को हमें आपके सेन्टर की लिस्ट इ-मेल (register@dadabhagwan.org) या फेक्स (079-39830033) के द्वारा भेजना न भूलें।

अडालज : (079) 39830400	**दिल्ली :** 9310022350	**अमरावती :** 9823127601
भोपाल : 9425676774	**जयपुर :** 9828422757	**कोलकता :** 033-32933885
इन्दौर : 9039936173	**पाली** : 9461251542	**पटना** : 9431015601
जबलपुर : 9425160428	**टोंक** : 9314788352	**बंगलूर** : 9590979099
भिलाई : 9827481336	**रायपुर :** 9425245616	**चेन्नाई** : 9380159957

अहमदाबाद रेल्वे स्टेशन से त्रिमंदिर अडालज (२२ कि.मी.) पहुँचने के लिए जानकारी :
(1) ओटोरिक्षा - किराया रुपये १२५-१५० और टेक्सी किराया रुपये २५०-३००
(2) रेल्वे स्टेशन के पासवाले सिटी बस स्टेन्ड से बस नं. ८९/१ में अडालज त्रिमंदिर पहुँच सकते हैं।
(3) स्टेशन से एस.टी. डिपो, गीतामंदिर जाकर वहाँ से मेहसाणा-कलोल-कडी की ओर जानेवाली लोकल एस.टी. बस में अडालज त्रिमंदिर के बसस्टोप पर उतरें।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

वडोदरा

२१-२२ मई, रात ८ से १०-३० - **सत्संग** और **२३ मई** (रवि), शाम ७-३० से ११ - **ज्ञानविधि**
स्थल : पारसी अगियारी ग्राउन्ड, सूर्यापेलेस होटेल के सामने, सयाजीगंज, **वडोदरा. संपर्क :** 9825032901

गोधरा

२४-२५ मई, रात ८ से १०-३० - **सत्संग** और **२६ मई** (बुध), शाम ७ से १०-३० - **ज्ञानविधि**
स्थल : न्यु इरा हाइस्कूल कम्पाउन्ड, साइन्स कॉलेज के पास, **गोधरा** (गुजरात)**.संपर्क :** 9924343468

अहमदाबाद

२८-२९ मई, रात ८ से १०-३० - **सत्संग** और **३० मई** (रवि), शाम ६-३० से १० - **ज्ञानविधि**
स्थल : संस्कार केन्द्र ग्राउन्ड, टैगोर होल के पास, पालडी, **अहमदाबाद. संपर्क :** 079-27540408

दिल्ही *(हिन्दी में सत्संग व ज्ञानविधि)*

२०-२१ अगस्त, शाम ६-३० से ९ - **सत्संग** और **२२ अगस्त** (रवि), शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**
स्थल : शाह ओडिटोरियम, दिल्ही गुजराती समाज मार्ग, सिविल लाईन्स, दिल्ही**. संपर्क :** 9310022350

बेंगलूर *(हिन्दी में सत्संग व ज्ञानविधि)*

२७-२८ अगस्त, शाम ६-३० से ९ - **सत्संग** और **२९ अगस्त** (रवि), शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**
स्थल : शिक्षक सदन ओडिटोरियम होल, कावेरी भवन के सामने, के.जी.रोड, बेंगलूर. **संपर्क :** 9590979099

Pujya Deepakbhai's USA-Canada Satsang Program 2010

Venue	Date	Day	Program	From	To	Venue	Contact nos
Atlanta, GA	16-Jun-10	Wednesday	Satsang	6.30 PM	9.00 PM	Gujarati Samaj	678-595-9631
Atlanta, GA	17-Jun-10	Thursday	Gnanvidhi	5.30 PM	9.00 PM	5331 Royalwood Parkway,	229-423-5453
Atlanta, GA	18-Jun-10	Friday	Aptaputra Satsang	6.30 PM	9.00 PM	Tucker,GA 30084	404-538-5000
						nilimapatel58@yahoo.com	404-934-7192
Jacksonville, FL	19-Jun-10	Saturday	Satsang	6.30 PM	9.00 PM	Twin Lakes Academy Middle School	(904)743-7327
Jacksonville, FL	20-Jun-10	Sunday	Aptaputra Satsang	10.00 AM	12.00 PM	8050 Point Meadows Drive,	(904)704-6966
Jacksonville, FL	20-Jun-10	Sunday	Gnanvidhi	5.30 PM	9.00 PM	Jacksonville, FL 32256	(904) 737-1674
Jacksonville, FL	21-Jun-10	Monday	Aptaputra Satsang	6.30 PM	9.00 PM	needom@gmail.com	(973) 618-6775
New York, NY	22-Jun-10	Tuesday	Satsang	6.30 PM	9.00 PM	Gujarati Samaj of New York	718-849-2530
New York, NY	23-Jun-10	Wednesday	Gnanvidhi	5.30 PM	9.00 PM	173-15 Horace Harding Expwy,	718-347-0050
						Fresh Meadows, NY 11365	718-631-0443
						surendralal1@yahoo.com	516-624-7628
Hunt Valley, MD	24-Jun-10	Thursday	Aptaputra Satsang	6.30 PM	9.00 PM	Baltimore Mariott	(301) 351-0510
Hunt Valley, MD	25-Jun-10	Friday	Gnanvidhi	5.30 PM	9.00 PM	Hunt Valley Inn, 245 Shawan Road,	(732) 766-7265
						Hunt Valley, MD. 21031	(410) 905-2342
						dadabhagwan.shibir@gmail.com	(757) 286-8021
NATIONAL SHIBIR							
Hunt Valley, MD	26-Jun-10	Saturday	Satsang/Samayik	9.30 AM	7.30 PM		Only for mahamtas and those who have previously registered.
Hunt Valley, MD	27-Jun-10	Sunday	Satsang/Samayik	9.30 AM	7.30 PM	Hunt Valley Inn	
Hunt Valley, MD	28-Jun-10	Monday	Satsang/Samayik	9.30 AM	7.30 PM	Hunt Valley	
Hunt Valley, MD	29-Jun-10	Tuesday	Satsang/Samayik	9.30 AM	7.30 PM	**Closest Airport**	
Hunt Valley, MD	30-Jun-10	Wednesday	Satsang/Samayik	9.30 AM	7.30 PM	International (BWI)	
Dallas, TX	01-Jul-10	Thursday	Aptaputra Satsang	7.00 PM	9.30 PM	DFW Hindu Temple Auditorium	817-329-4656
Dallas, TX	02-Jul-10	Friday	Gnanvidhi	6.30 PM	10.00 PM	1605 North Britain Road	214-636-4787
Dallas, TX	03-Jul-10	Saturday	Satsang	10.00 AM	12.30 PM	Irving, TX 75061-2608	972-369-3298
						dallasmahatma@yahoo.com	214-316-8123
Houston, TX	04-Jul-10	Sunday	Satsang	10.00 AM	12.30 PM	Shree Vallabh Priti Seva Samaj Hall	832-771-8204
Houston, TX	04-Jul-10	Sunday	Gnanvidhi	4.30 PM	8.00 PM	(VPSS Haveli), 11715 Bellfort Village Dr,	832-646-4696
Houston, TX	05-Jul-10	Monday	Satsang	10.00 AM	12.30 PM	Houston, TX 77031-2629	832-405-5172
Phoenix, AZ	05-Jul-10	Monday	Aptaputra Satsang	6.30 PM	9.00 PM	Shreenathji Temple Hall, 6300 South 23rd Ave.,	480-209-1472

Pujya Deepakbhai's USA-Canada Satsang Program 2010

Venue	Date	Day	Program	From	To	Venue	Contact nos
Los Angles, CA	06-Jul-10	Tuesday	Satsang with Eng. Translation	6.30 PM	9.30 PM	Anil and Bhavina Patel	714-337-9000
Los Angles, CA	07-Jul-10	Wednesday	Gnanvidhi (Guj/Eng)	5.30 PM	9.30 PM	2164 Rocky View Road	909-510-1258
Los Angles, CA	08-Jul-10	Thursday	Satsang with Eng. Translation	6.30 PM	9.30 PM	Diamond Bar, CA 91765	323-493-3030
						boloram@sbcglobal.net	562-201-5700
San Jose, CA	09-Jul-10	Friday	Satsang	6.30 PM	9.00 PM	Vaishnav Parivar - Haveli	408-624-1611
San Jose, CA	10-Jul-10	Saturday	Gnanvidhi	4.00 PM	7.00 PM	25 Corning Ave.,	408-910-6052
San Jose, CA	11-Jul-10	Sunday	Aptaputra Satsang	10.00 AM	12.30 PM	Milpitas, CA 95035	408-978-3938
San Jose, CA	11-Jul-10	Sunday	Satsang	4.00 PM	7.00 PM	mydada@chowlera.com	408-646-4977
Champaign, IL.	12-Jul-10	Monday	Aptaputra Satsang	6.30 PM	9.00 PM	Hotel Hanford Inn & Suites	217-689-1075
Champaign, IL.	13-Jul-10	Tuesday	Gnanvidhi	5.30 PM	9.00 PM	2408 North Cunningham Avenue	217-689-1035
						Urbana, IL 61802	217-821-0764
						mehuljk@gmail.com	217-493-8250
Chicago, IL	14-Jul-10	Wednesday	Satsang	6.00 PM	8.30 PM	Jain Society of Metropolitan Chicago	847-980-5759
Chicago, IL	15-Jul-10	Thursday	Gnanvidhi	5.30 PM	9.00 PM	435 Rt. 59, Bartlett, IL 60173	847-885-8576
Toronto, Canada	17-Jul-10	Saturday	Satsang	6.30 PM	9.00 PM	Sanatan Mandir	416-731-5236
Toronto, Canada	18-Jul-10	Sunday	Satsang	10.00 AM	12.00 PM	9333 Woodbine Ave.,Markham,	416-675-3543
Toronto, Canada	18-Jul-10	Sunday	Gnanvidhi	4.30 PM	8.00 PM	Ontario, Canada L6C 1T5	toronto.dadabhagwan@gmail.com
NORTH EAST GURUPURNIMA - 2010							
Cherry Hill, NJ	20-Jul-10	Tuesday	Satsang/Samayik	9.30 AM	12.30 PM	Crowne Plaza	856-875-4775
Cherry Hill, NJ	20-Jul-10	Tuesday	Satsang	4.30 PM	7.00 PM	2349 Marlton Pike W,	201-229-1483
Cherry Hill, NJ	21-Jul-10	Wednesday	Satsang/Samayik	9.30 AM	12.30 PM	Cherry Hill, NJ 08002	732-322-2639
Cherry Hill, NJ	21-Jul-10	Wednesday	Satsang	4.30 PM	7.00 PM	ccshah@yahoo.com	732-968-6836
Cherry Hill, NJ	22-Jul-10	Thursday	Satsang/Samayik	9.30 AM	12.30 PM	Closest Airport	
Cherry Hill, NJ	22-Jul-10	Thursday	Satsang	4.30 PM	7.00 PM	PHILADELPHIA INTERNATIONAL(PHL)	
Cherry Hill, NJ	23-Jul-10	Friday	Satsang/Samayik	9.30 AM	12.30 PM	Every evening from 9 PM to 10 PM	
Cherry Hill, NJ	23-Jul-10	Friday	Satsang	4.30 PM	7.00 PM	we will have different programs planned,	
Cherry Hill, NJ	24-Jul-10	Saturday	Satsang	10.00 AM	12.30 PM	including Garba.	
Cherry Hill, NJ	24-Jul-10	Saturday	Gnanvidhi	4.00 PM	7.30 PM	*Also Different Exhibitions, Theme Shows,*	
Cherry Hill, NJ	25-Jul-10	Sunday	Gurupujan	9.00 AM	2.00 PM	*Children's World, Puppet Show and more.*	

मई २०१०
वर्ष - ५, अंक - ७
अखंड क्रमांक - ५५

दादावाणी

RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2009-2011
Valid up to 31-12-2011
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2009-2011
Valid up to 31-12-2011
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

ज्ञानी ही दिखलायें मार्ग संसार सागर से पार उतरने का

यह सब आप नहीं चलाते हैं, क्रोध-मान-माया-लोभ कषाय ही चलाते हैं। कषायों का ही राज है। खाते हो, पीते हो, संतानो की शादी कराते हो, यह सारी परसत्ता है, हमारी सत्ता नहीं हैं। ये सारे कषाय भीतर बैठे हैं, उनकी ही सत्ता है। 'ज्ञानी पुरुष' 'मैं कौन हूँ?' उसका ज्ञान प्रदान करें तब इन कषायों से, इस जंजाल से छुटकारा होता है। यह संसार छोडने से या धक्का देने से छूटे ऐसा नहीं है, इसलिए ऐसी कुछ भावना करो कि इस संसार से छूटा जाए तो अच्छा। अनंत अवतार से छूटने की भावना हुई है, लेकिन राहनुमा चाहिए कि नहीं चाहिए? पथ-प्रदर्शक 'ज्ञानी पुरुष' चाहिए। 'ज्ञानी पुरुष' जो समझ प्रदान करें, उस समझ से छुटकारा होता है।

-दादाश्री

Publisher & Editor Mr. Deepakbhai Desai on behalf of Mahavideh Foundation Printed at **Mahavideh Foundation Printing Press** :- Parshvanath Chembers, Income Tax, Ahmedabad-14 and published.

Printed by Mahavideh Foundation - (079) 27542964,27540216